सम्पादकीय
नारी सशक्तीकरण का अर्थ है भाव संवेदनाओं का जागरण 2

पूरे देश में हर्षोल्लास के साथ मना आजादी का अमृत महोत्सव 3

कनाडा
प्रथम चेतना केन्द्र के लिए 108 कुण्डीय यज्ञ के साथ भूमिपूजन एवं यूथ कैम्प 7

आजादी का अमृत महोत्सव
युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में खूब खिला राष्ट्रभक्ति का केसरिया रंग 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 सितम्बर 2022

वर्ष : 35, अंक : 05
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 अगस्त 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/16/2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

विद्या का मोल

'नवसृजन योजना' महाकाल की योजना है। वह पूरी तो होनी ही है। उस परिवर्तन का आधार चरित्रनिष्ठ, भाव-संवेदनायुक्त व्यक्तित्वों से बनेगा। ऐसे व्यक्तित्व बनाना विद्या का काम है, मात्र शिक्षा उसके लिए पर्याप्त नहीं। मात्र शिक्षा-साक्षरता तो मनुष्य को निपट स्वार्थी भी बना सकती है। उसमें विद्या का समावेश अनिवार्य है। अस्तु, नवयुग के अनुरूप मनःस्थितियाँ एवं परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए बड़ी संख्या में ऐसे प्राध्यापकों की आवश्यकता अनुभव हो रही है, जिनकी शिक्षा भले ही सामान्य हो, पर वे अपने चुम्बकीय व्यक्तित्व और चरित्र से निकटवर्ती क्षेत्र को अपनी विशिष्टताओं से भर देने की विद्या के धनी हो।

नाविक के लिए आवश्यक नहीं कि उसके पास स्नातकोत्तर परीक्षा पास करने का प्रमाण-पत्र हो ही। मजबूत कलाई और चौड़े सीने वाला नाविक हिम्मत के सहारे उफनती नदी की छाती पर दनदनाता हुआ दौड़ता रहता है। उसे अपने को तथा नाव पर बैठी हुई सवारियों को इस पार से उस पार पहुँचाने में देर नहीं लगती, वरन् वह हिम्मत और सफलता को देखते हुए गर्व-गौरव अनुभव करता है।

विद्वान, मनीषी और मूर्धन्य सर्वत्र सम्मान पाते हैं। उनकी गरिमा और उपयोगिता से कोई इन्कार नहीं कर रहा है, वरन् कहा यह भर जा रहा है कि ईमान और भगवान को भुला देने वाले आज के समुदाय को ऐसे उद्धारक चाहिए, जो गहरी कीचड़ में फँसे जानवरों को खींच-घसीटकर किनारे तक पहुँचा देने की साहसिकता का परिचय दे सकें।

संकीर्ण स्वार्थपरता ध्वस्त होगी

अगले दिनों नवयुग का आगमन आँधी-तूफान की तरह दौड़ता चला आ रहा है। उसमें होगा तो प्रथा-प्रचलनों का परिवर्तन भी, पर सबसे प्रमुख एवं मौलिक परिवर्तन एक ही होगा कि मनुष्य को इक्कड़ बनकर नहीं रहने दिया जाएगा। जंगली जानवरों में कभी-कभी झुण्ड को छोड़कर कोई उद्दण्ड अकेले रहने लगता है। वह सामूहिकता की रीति-नीति भूल जाता है और बगावत पर उतर आता है। वह किसी पर भी आँखें बंद करके हमला बोल देता है। उसे 'इक्कड़' कहते हैं।

इक्कड़ मनुष्य, जिसके ऊपर संकीर्ण स्वार्थपरता का प्रेत-पिशाच हर समय चढ़ा रहता है, उसे हर किसी के लिए खतरनाक ही समझना चाहिए। समस्त अपराधों और अनाचारों की जन्मदात्री संकीर्णता-स्वार्थपरता ही है। आज की अगणित विडम्बनाओं, विभीषिकाओं का यदि एकमात्र कारण ढूँढ़ना हो तो उसे एक ही रूप में मापा जा सकता है-तृष्णा और अहमन्यता। यदि इसमें कटौती की जा सके, तो समझना चाहिए कि सिर पर लदा चट्टान जैसा भारी बोझ हल्का हुआ और मानवी गरिमा के अनुरूप प्रगति कर सकने का पथ प्रशस्त हुआ।

जीवन विद्या के प्राध्यापक चाहिए

संयम, सेवा, साधना एवं पारमार्थिक भाव से युक्त आध्यात्मिक जीवन-पथ अपनाने वाला हर व्यक्ति नवयुग के निर्माण में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शिक्षक दिवस पर विशेष

छोटी, किन्तु पते की बात

मनुष्य की संरचना इस प्रकार हुई है कि वह दो मुट्ठी अनाज और दो गज कपड़े के सहारे मजे में गुजारा कर सकता है। इतना जुटाने में उसका दो घंटे का श्रम-समय पर्याप्त होना चाहिए। यह सुविधा सृष्टि के अन्य किसी प्राणी को उपलब्ध नहीं है। उन्हें दिन भर पेट भरने का जुगाड़ बिठाने में दौड़ना पड़ता है। सुरक्षा की दृष्टि से भी उन्हें भयभीत रहना पड़ता है;

पर मनुष्य के सामने ऐसी कोई समस्या नहीं है। निजी निर्वाह के अतिरिक्त जो कुछ उसके पास बच जाता है, वह आवश्यकता पूर्ति के अतिरिक्त सैकड़ों-हजारों गुना अधिक है। इस बचत को पुण्य-परमार्थ के लिए नियोजित करके ही संसार के विवेकवानों ने देवमानव का स्तर पाया है, अपना भला किया है और असंख्यों को अपने कंधों पर बिठाकर पार उतारने का श्रेय सम्पादित किया है।

यदि इतनी मोटी बात किसी की भावचेतना में प्रवेश कर सके, व्यवहार में उतर सके तो समझना चाहिए कि उसे देवमानव बनने का सौभाग्य हस्तगत हो गया। उसे अवांछनीयता के प्रवाह को, वातावरण को बदलने का अकूत बल उपलब्ध हो गया, अन्यथा सड़न से उत्पन्न होने वाले विष-कीटकों द्वारा सर्वत्र गंदगी फैलाने का खतरा सामने खड़ा ही रहेगा।

युगसृजेताओं की रीति-नीति

नवयुग में शिक्षा-साक्षरता तो बढ़ती ही रहेगी। व्यक्ति, समाज और सरकार ने उसे मान्यता दे दी है, फिर वह बढ़ेगी क्यों नहीं? कुछ ही दिन में निरक्षरता की कालिख से सभी लोग अपना मुँह धोकर साफ कर लेंगे। प्रश्न विद्या का है। उसका न कहीं महत्त्व समझा जा रहा है और न कोई आवश्यकता ही। मानवी गरिमा को उपलब्ध करने के लिए किसी का मन नहीं है। उत्कृष्ट आदर्शवादिता और दूरदर्शी विवेकशीलता को बढ़ाने-अपनाने के लिए कहीं ऐसे प्रयत्न नहीं चल रहे हैं, जिन्हें आशा भरी दृष्टि से देखा और सन्तोषजनक कहा जा सके।

इस आवश्यकता की पूर्ति युग सृजेताओं को करनी पड़ेगी। आशा की गई है कि वे गायत्री परिवार (शान्तिकुञ्ज परिवार) से निकलेंगे और अपने महान व्यक्तित्व और कर्तृत्व से समूचे वातावरण में नवजीवन का संचार करेंगे। ऐसे श्रेयाधिकारियों को अभ्युदय की दिशा में दो कदम अनिवार्य रूप से उठाने पड़ेंगे। एक निजी आवश्यकताओं और महत्त्वाकांक्षाओं को घटाना। इसे संयम कह सकते हैं। दूसरा विद्या-विस्तार के लिए तड़पन भरा पुरुषार्थ उभारना, इसे सेवा-साधना कह सकते हैं।

प्रथम चरण में औसत नागरिक के निर्वाह की कसौटी पर स्वयं को खरा सिद्ध करना होगा। यहाँ अधिक उत्पादन पर रोक नहीं है, पर निजी खर्चों में इतनी अधिक कटौती करनी चाहिए कि उसे तपस्वी जीवन न सही, 'सादा जीवन, उच्च विचार' स्तर का तो समझा ही जा सके। इतना पहला कदम उठा लेना वह अनुभव करेगा कि उसके पास जो समय, श्रम, कौशल, मनोयोग ही नहीं, साधनों का भी इतना बाहुल्य है कि समय की महती पुकार को पूरा करने के लिए युग देवता के चरणों पर श्रद्धाञ्जलि के रूप में प्रस्तुत करते हुए असंख्यों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर सके। इस संदर्भ में न तो उच्च शिक्षा की आवश्यकता है और न विपुल सम्पन्नता की। उस चतुरता की भी आवश्यकता नहीं है, जो लम्बे-चौड़े भाषण देकर लोगों को बहका तो लेती है, पर निजी व्यक्तित्व खोखला होने के कारण प्रभाव छोड़ने की दृष्टि से शून्य ही रहती है।

इन दिनों उपदेशकों-वक्ताओं की हर क्षेत्र में एक प्रकार की आँधी जैसी आई हुई है। ऊँची कुर्सी पर बैठने, गले में माला पहनने और माइक को झकझोर कर रख देने के लिए हर कोई प्यासा फिरता है। एक को प्रमुखता मिलने पर उसके अन्य साथी मुँह फुलाकर बैठ जाते हैं।

निजी सुविधाओं में कटौती के प्रति जो लोग श्रद्धा सँजो लेंगे, उन्हे सच्चे अर्थों में संयमी, तपस्वी, वैरागी कहा जा सकेगा, भले ही वे घर-परिवार के बीच मिल-जुलकर सज्जनोचित जीवन निर्वाह करते हों। उनके लिए यह नितान्त सरल होगा कि अपना आदर्श उपस्थित करते हुए अनेकों को अपेक्षाकृत ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने का प्रोत्साहन दे सकें। युग-अध्यापकों की इन दिनों जो भारी माँग है, वे इसी वर्ग में से निकलेंगे, जिन्होंने अध्यात्म दर्शन के इन आधारभूत सिद्धान्तों को किसी सीमा तक अपना लिया होगा, जो आदर्श पालन की दृष्टि से दूसरों की अपेक्षा अपना स्तर कुछ ऊँचा उठा सके होंगे।

वाङ्मय खण्ड 49 'शिक्षा एवं विद्या', पृष्ठ 5.34-35 से संकलित-सम्पादित

स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में
शिक्षा का स्वरूप

''शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमताओं को पूर्ण विकसित करना है। ... जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्रबल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, वह भी कोई शिक्षा है? जिस शिक्षा के द्वारा जीवन में अपने पैरों पर खड़ा हुआ जाता है, वही सच्ची शिक्षा है।

शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि तुम्हारे दिमाग में ऐसी बहुत सी बातें इस तरह ठूँस दी जाएँ कि उन्हें तुम्हारा दिमाग जीवन भर हजम न कर सके। जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है। यदि तुम पाँच ही भावों को हजम कर तद्नुसार जीवन और चरित्र गठित कर सके हो तो तुम्हारी शिक्षा उस आदमी की अपेक्षा बहुत अधिक है, जिसने एक पूरी की पूरी लाइब्रेरी ही कंठस्थ कर ली है।''

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा का जो स्वरूप बताया है, उसके अनुसार किसी को अक्षर ज्ञान करा देने मात्र से शिक्षा के प्रचार की आवश्यकता पूरी नहीं हो जाती, वरन् उसके लिए तो ऐसी प्रणालियों का प्रवाह उत्पन्न किया जाना चाहिए जो व्यक्ति को जीवन निर्माण की दिशा दे। शिक्षा के प्रचार को प्राथमिकता देते हुए उन्होंने कहा था-''अपने से निम्न श्रेणी वालों के प्रति हमारा एक ही कर्तव्य है-उनको शिक्षा देना। उनके खोए हुए व्यक्तित्व के विकास के लिए सहायता करना। उनमें विचार पैदा कर दो, बस उन्हें इसी एक सहायता की आवश्यकता है और शेष सब कुछ इसके फलस्वरूप अपने आप ही आ जाएगा।''

नारी सशक्तीकरण का अर्थ है भाव संवेदनाओं का जागरण

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी की तरह ही आत्मीयता और प्यार बाँटकर हो सकता है देवमानवों का निर्माण

जगन्माता के वंशज हम

परम वन्दनीया माताजी अपने प्रवचनों में अक्सर एक दृष्टांत सुनाया करती थीं, जिसका उल्लेख माताजी के महाप्रयाण के बाद श्रद्धेया शैल जीजी ने भी कई बार किया है। वह दृष्टांत इस प्रकार है:-

''सर्दियों के दिन थे, रात का समय था। एक जंगल में एक चिड़िया और चिड़ा पेड़ पर बैठे थे। तभी एक हारा, थका, निराश बहेलिया अपने बच्चों के साथ पेड़ के नीचे आकर बैठ गया। भूखे बच्चों का रो-रो कर बुरा हाल था और बहेलिया परेशान, क्योंकि आज उसे एक भी शिकार हाथ नहीं लगा था। स्वयं को असहाय पाकर उसने पेड़ के नीचे कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कीं, अलाव जलाया और बैठ गया। वह बच्चों को दिलासा देने लगा, धैर्य रखो, भगवान पर विश्वास रखो, वह हमारी सहायता जरूर करेंगे।

चिड़ा-चिड़िया बहेलिये का दुःख देखकर बहुत व्यथित हुए। आपस में बात करने लगे, इन्होंने दिनभर परिश्रम किया है, हमारे पेड़ के नीचे आकर बैठे हैं इसलिए हमारे अतिथि हैं, हम इन्हें भूखा कैसे सोने दें? शरणागत परेशान है तो हमें उसकी मदद जरूर करनी चाहिए। मदद न मिली तो उसका भगवान के प्रति विश्वास भी कमजोर होगा। सोचने लगे कि बहेलिए की सहायता कैसे की जाय। जब और कोई उपाय न सूझा तो दोनों ने स्वयं को ही आहूत करने का निर्णय लिया। एक-एक कर दोनों जलती अग्नि में गिर गए। बहेलिया और उसके बच्चों ने यह अनहोनी देख भगवान को धन्यवाद दिया और अपनी भूख मिटाई।''

यह सुनाने के बाद माताजी भरे हृदय एवं रुँधे कंठ से कहती थीं, *''बच्चो! वह चिड़ा-चिड़िया और कोई नहीं, तुम्हारे गुरुजी और माताजी ही हैं। तुमने हमारे प्रति निष्ठा रखी है, मिशन के लिए समर्पण किया है तो विश्वास रखना कि हम तुम्हारा पूरा-पूरा ध्यान रखेंगे। हम अपना सबकुछ देकर भी तुम्हारे हितों की रक्षा करेंगे।''* यह कथानक अपने बच्चों से परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की आत्मीयता और प्रेम की गाथा है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम ऐसी जगद्जननी माँ के बच्चे हैं, उनके वंशज हैं।

परम वंदनीया माताजी के उत्सर्ग की इस पराकाष्ठा के बल पर ही अखिल विश्व गायत्री परिवार बना है। परम पूज्य गुरुदेव के तपोबल से युग परिवर्तनकारी विराट योजना अस्तित्व में आई तो परम वन्दनीया माताजी के मातृत्व ने उसे क्रियान्वित करने वाला विराट देव परिवार बनाया है। स्वयं परम पूज्य गुरुदेव कहा करते थे कि इस मिशन को माताजी ने ही सँभाला है, कर्म की अधिष्ठाता शक्ति माताजी ही हैं।

परम वंदनीया माताजी के मातृत्व की अनुभूति करोड़ों लोगों ने की है। जिसने भी परम वंदनीया माताजी के दर्शन किए उसकी यही अनुभूति रही है कि उसे अपने निजी परिवार के लोगों से भी बढ़कर प्यार माताजी से मिला। अनेक दृष्टांत हैं जिसमें लोग बताते हैं कि उनके मथुरा पहुँचने पर माताजी स्वयं अपने हाथों से भोजन तैयार कर खिलाया करती थीं। 25-50 लोगों का भोजन वे अकेले ही बनातीं थीं। असमय पहुँचने वाला अतिथि भी कभी भूखा नहीं सोया।

त्याग और संयम की पराकाष्ठा

एक ओर ऐसा प्रेम और उदारता तो दूसरी ओर त्याग और संयम की पराकाष्ठा भी परम वंदनीया माताजी के जीवन में दिखाई देती है। कई संस्मरण ऐसे हैं जिसमें सजल श्रद्धा स्वरूपा माताजी को अपने हृदय पर पत्थर रखकर अपने बच्चों को बहलाना पड़ा है। लोक मंगल के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने वाली जमींदार घराने की परम वंदनीया माताजी ने अपने सारे गहने गायत्री तपोभूमि के निर्माण के लिए दे दिए। दूसरी ओर श्रद्धेया शैल जीजी के बचपन के संस्मरण भी याद आते हैं।

शैल (श्रद्धेया जीजी) और सतीश (आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा जी) छोटे ही थे। एक दिन रात को उन्हें भूख लगी। खाने के लिए तैयार कुछ था नहीं, माताजी ने बड़े प्यार से उन्हें हलुआ बनाकर खिलाने का आश्वासन दिया। घर में घी नहीं था, लेकिन उन्होंने आटा सेककर और गुड़ मिलाकर, जिसे मीठी लेई भी कहा जा सकता है, बच्चों को दिया।

श्रद्धेया जीजी नन्हीं-सी थीं। उन्हें रास्ते में एक रुपया पड़ा मिला। उन्होंने उस रुपये से गुड़िया और कुछ खिलौने खरीदे और खुशी-खुशी घर ले आईं। माताजी ने देखा, पूछा तो सारी बात बता दी। उन्होंने मिला धन अपना न होने की बात कहकर खिलौने वापस करा दिए और वह रुपया मंदिर में चढ़वा दिया। माताजी का हृदय द्रवित हो गया। सोचने लगीं, काश! हम अपने बच्चों को खिलौने दिला पाते तो पराए धन के प्रति बच्चों के मन में लालच क्यों आता?

माताजी के जीवन की प्रेरणा

परम वंदनीया माताजी के महाप्रयाण दिवस (भाद्रपद पूर्णिमा-10 सितम्बर 2022) पर उनके मातृत्व के विलक्षण स्मरणों को याद करने का प्रयोजन पाठकों को यह याद दिलाना है कि प्रेम, संवेदना, सद्भाव, संयम, त्याग और समर्पण ही वह मंत्र है, जिसके द्वारा 'मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग' का अवतरण संभव हो पाता है। परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-2026 के परिप्रेक्ष्य में हम वर्ष 2022-23 को नारी सशक्तीकरण वर्ष के रूप में मना रहे हैं। नारी सशक्तीकरण का अर्थ समाज में त्याग, समर्पण, श्रम, साधना, प्रेम और आत्मीयता जैसे सद्गुणों के विस्तार से समाज में भाव-संवेदनाओं का जागरण ही है। माताजी ने अपना मातृत्व लुटा कर लाखों-करोड़ों लोगों के हृदय में विद्यमान देवत्व को जगाया और उन्हें लोकमंगल के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी, उमंग जगाई, एक विराट देव परिवार बनाया। देव परिवार विस्तार के हमारे प्रयास भी इसी प्रेम, संयम, सद्भाव के विस्तार से ही सफल हो सकते हैं।

आज हमारे समक्ष पतनोन्मुख समाज के प्रवाह को पलटने की चुनौती है। लोग मानव जीवन की गरिमा से ही अनभिज्ञ दिखाई देते हैं। आस्था के नाम पर अंधविश्वास और मूढ़ मान्यताएँ फल-फूल रही हैं। वर्तमान भौतिक जीवन शैली में स्वार्थ-संकीर्णता इस कदर हावी हो गई है कि अधिकांश लोग आत्मिक सुख और आनन्द की कल्पना तक करने की स्थिति में नहीं हैं। हमें परम वंदनीया माताजी के जीवन-आदर्शों को अपनाते हुए लोगों को अपनत्व का अहसास कराने की आवश्यकता है। लोगों के हृदय में जगह बनाए बिना अशक्ति, अभाव, अशांति, असुरक्षा, भय, भ्रम, भेद आदि अवांछनीयताओं से त्रस्त मानवता को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना कठिन है। अपने श्रम, संयम और संवेदनाओं के सहारे लोगों की कष्ट-कठिनाइयों में उनका सहारा बनने से ही आत्मीयता का विस्तार संभव है। हम लोगों में धैर्य और आत्मविश्वास जगा सकें, स्वार्थ-संकीर्णता को त्याग कर उन्हें लोकमंगल के पथ पर चलने के लिए सहमत कर सके, तभी स्वर्ग धरा पर उतरेगा।

वर्तमान युग की प्रतिकूलताएँ

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता लोगों के चिन्तन और चरित्र को बदलने की है। भौतिकवादी सोच ने मनुष्य को बहुत छोटा बना दिया है। धन बहुत बढ़ा, पर धर्म नष्ट हो रहा है। नैतिकता की अहमियत नहीं, दूसरों की भूख और पीड़ा से किसी का कोई लेना-देना नहीं, भ्रष्टाचार-अराजकता से किसी को परहेज नहीं। कुबेर जैसा खजाना भरने के बाद भी धन बटोरने की लालसा थमती नजर नहीं आती, चाहे इसके लिए दूसरों के हक और हितों की कितनी भी अनदेखी क्यों न करनी पड़े। धन के आगे रिश्तों की अहमियत समाप्त हो गई है।

परिवार है, पर प्यार नहीं। माता-पिता का स्थान तो पहले ही परिवार की परिधि से बाहर गया था, अब घर के अन्य सदस्य भी अपने से अपना मतलब रखने लगे हैं। दुनिया अपने आप तक सिमट गई लगती है। चरित्र और संस्कारों के विकास की बात कौन कहे, परस्पर एक-दूसरे की कुशलक्षेम तक जानने की फुरसत नहीं। परस्पर संवाद के अभाव में बच्चे उच्छृंखल, अनुशासनहीन होते जा रहे हैं। इस उपेक्षा की याद तब आती है जब उसके दुष्परिणाम उभरते हैं और तब जब सुधार-संस्कार की सारी संभावनाएँ क्षीण हो जाती हैं।

सुख-सुविधाएँ अपार हैं, लेकिन शान्ति और संतोष नदारद है। इंसान ने स्वयं को प्रकृति से इतना दूर कर लिया है कि प्रतिकूलताओं के हलके-से थपेड़े भी भीषण कष्ट का अहसास कराने लगते हैं। काया रुग्ण होती जा रही है। मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है। झूठी शान, फैशन-दिखावे ने मन में जलन, कुढ़न, ईर्ष्या, द्वेष को इतना अधिक बढ़ा दिया है कि सुख-सुविधाओं की होड़ कहीं थमने का नाम ही नहीं लेती।

नारी सशक्तीकरण अभियान

व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर समस्याओं का अम्बार है। समाधान एक ही है- मानवीय चिंतन-चरित्र का उत्थान। मनःस्थिति बदले तो परिस्थितियाँ स्वतः ही बदलती चली जाएँगी। स्वच्छ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज के निर्माण का आधार यही है। इस कार्य को नारीशक्ति ही बेहतर ढंग से सम्पादित कर सकती है, क्योंकि परमात्मा ने नारी को सृजन-संवेदनाओं की विशेषताओं के साथ ही गढ़ा है। परम वन्दनीया माताजी और उनकी जैसी अनेक देवियों ने समाज के प्रवाह को पलटने का आदर्श प्रस्तुत किया है, आवश्यकता उनके बताए जीवन मूल्यों को अपनाने और दृढ़ता के साथ उस पथ पर चल पड़ने की है। नारी सशक्तीकरण अभियान का यही तात्पर्य है।

नारी सशक्तीकरण के लिए व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों स्तर पर क्रान्तिकारी कदम उठाने की आवश्यकता है। सुलझे हुए विचारों वाली आत्मबल सम्पन्न देवियाँ ही दूसरों को प्रेरित और प्रभावित करने में सफल होती हैं। अतः पहली आवश्यकता साधना और स्वाध्याय के बल पर अपने आत्मबल, आत्मविश्वास और संकल्पशक्ति को जगाने की है।

परम वन्दनीया माताजी यह भी कहा करती थीं कि बेटे! गुरुजी की नाव में बैठ गए हो तो हम तुम्हें पार लगा ही देंगे, तुम्हें डूबने नहीं देंगे। हमारी बातों पर दृढ़ विश्वास रखना, किसी प्रकार की चिंता या आशंका मत करना। धैर्य और साहस के साथ बैठे रहना।

स्नेहसलिला परम वंदनीया माताजी

माताजी की इस बात पर विश्वास दृढ़ होते ही जीवन की दिशाधारा ही बदल जाती है। फिर निजी कामनाओं की बजाय समर्पण का ऐसा भाव जागता है कि रामप्रसाद बिस्मिल की पंक्तियाँ याद आती हैं-

मालिक तेरी रजा रहे, और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे।

साधन-सुविधाओं की चाह तिरोहित हो जाती है, पावन गुरुसत्ता का दिव्य संरक्षण और आशीर्वाद पाकर जीवन धन्य बनाने के लिए उनके बताए पथ पर चलते चले जाने की इच्छा ही शेष रह जाती है। कहा जाता है कि भक्त प्रह्लाद के गले में डाली गई सर्पों की माला फूलों की माला बन गई थी और मीरा को दिया गया जहर अमृत बन गया था। समर्पण पक्का और संकल्प दृढ़ हो तो युग निर्माण के पथ पर चलते हुए मिलने वाली कष्ट-कठिनाइयाँ भी उस पथ पर चलते हुए मिलने वाले आत्म-संतोष, लोक सम्मान एवं दैवी अनुग्रह के प्रभाव से वैसी ही प्रतीत होती हैं जैसे कड़ी धूप के बाद शीतल छाया की सुखद अनुभूति।

वंदनीया माताजी का सर्वमान्य स्वरूप **'सजल श्रद्धा'** है। इसी श्रद्धा, सद्भावना, संवेदना को जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता है। गायत्री उपासना के साथ गुरुसत्ता के उदात्त आदर्शों का सतत स्मरण और साहसपूर्वक विवेकसम्मत पथ पर अग्रगमन से सफलता मिलती है-श्रद्धा बढ़ती है। गुरुसत्ता का यह आश्वासन हृदय में दृढ़ विश्वास के साथ धारण करने की आवश्यकता है कि सन्मार्ग पर चलते हुए आने वाली कष्ट-कठिनाइयाँ हमारी परीक्षा मात्र है।

मातृशक्ति अपने परिवार को स्वर्ग बना सकती है। परिवार के सदस्यों के चिन्तन और चरित्र को उत्कृष्ट बना सकती है। उनमें स्नेह, सहकार, परमार्थ, सहयोग, सम्मान, श्रद्धा के भाव जगाकर उन्हें अच्छा इंसान बना सकती है। यह सब उपदेश मात्र से नहीं, बल्कि श्रेष्ठता के प्रति अपनी श्रद्धा-निष्ठा को परिपक्व करने से संभव होगा। अपने व्यक्तित्व को अनुकरणीय बनाना होगा। गायत्री उपासना और बलिवैश्व यज्ञ जैसे उपायों से घर-परिवार का वातावरण बदल जाता है। आवश्यकता मात्र इतनी है कि कौन क्या सोचेगा और क्या कहेगा? इसकी परवाह न कर सबके प्रति सद्भाव के साथ श्रेष्ठपथ पर कदम निरन्तर बढ़ते रहें। परम्पराओं की लकीर पीटने की बजाय विवेक को महत्त्व देने का दृढ़ निश्चय हो। अवांछनीयताओं को अस्वीकार करने का सदाशयतापूर्ण दृढ़ मनोबल हो। अपने व्यक्तित्व को एक साँचे की तरह ढाला जाए तो उसमें परिवार के सभी सदस्य ढ़लते चले जाएँगे।

सधे व्यक्तित्वों को समाज के नवोन्मेष के लिए आगे आने की भी आवश्यकता है। सामाजिक स्तर पर सक्रियता के अनेक आयाम हैं, जिनकी चर्चा अगले अंक में करेंगे। परम वंदनीया माताजी के महाप्रयाण दिवस पर हम उनके मातृत्व से प्रेरणा लेकर अपनी भाव-संवेदनाओं का पोषण करते हुए स्वर्गोपम समाज के निर्माण में जुट जायें, यही उन्हें हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

गायत्री परिवार ने प्रेरणाप्रद कार्यक्रमों के संग मनाया आजादी का अमृत महोत्सव

अखिल विश्व गायत्री परिवार की हर शक्तिपीठ, हर शाखा, हर परिजन ने स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगाँठ के राष्ट्रीय पर्व 'आजादी का अमृत महोत्सव' में न केवल भाग लिया अपितु अपने विचार क्रान्ति, व्यक्तित्व विकास एवं समाजोत्थान के अभियान का बड़ी कुशलता के साथ संदेश भी दिया। इस अंक के प्रकाशन तक मिले कुछ शाखाओं के समाचार प्रस्तुत हैं।

कानपुर में राष्ट्रीय उत्सव

छिन्दवाड़ा में तिरंगे ने बढ़ाई शक्तिपीठ की शोभा

केन्द्रीय कारागार कोटा में रैली का नेतृत्व

शक्तिपीठ देवास से शोभायात्रा का शुभारम्भ

अणुशक्तिनगर, मुम्बई के बच्चों का उत्साह

75 वृक्षों की पौध रोपी
अमृत महोत्सव का स्मारक बनाया

कानपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार की कानपुर शाखा ने छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर में 75 वृक्ष रोपकर आजादी के अमृत महोत्सव का स्मारक बनाया। इसमें डॉ संगीता सारस्वत एवं डॉ. अमरनाथ सारस्वत तथा गायत्री परिजनों सहित कुलपति श्री विनय कुमार पाठक जी सपत्नीक सहभागी बने। पं. जवाहर लाल नेहरू राजकीय होमियोपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय परिसर में भी वृहद वृक्षारोपण किया गया। वहाँ के छात्रों को एक-एक वृक्ष गोद लेकर उसके पालन पोषण की जिम्मेदारी सौंपी गई।

बाल संस्कारशाला के बच्चों की रैली

मुम्बई। महाराष्ट्र

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर दिया, अणुशक्तिनगर बाल संस्कार शाला टीम द्वारा सुबह बाल उत्कर्ष-राष्ट्र निर्माण पदयात्रा निकाली गई। बच्चे बीच-बीच में 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा, हम सुधरेंगे युग सुधरेगा' का नारा लगाते रहे। देश के लिए मर-मिटने वाले शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों और देश के सैनिकों की शौर्य गाथा का स्मरण कराते हुए सबमें राष्ट्रप्रेम के भाव विकसित किए गए।

भव्य तिरंगा वाहन जनजागरण यात्रा का आयोजन हुआ

छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार छिंदवाड़ा ने आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए भव्य तिरंगा वाहन जनजागरण यात्रा निकाली। यह गायत्री चेतना केंद्र बस स्टैंड से इंदिरा तिराहा सत्कार तिराहा ,परासिया नाका से वीआईपी रोड होते हुए गायत्री शक्तिपीठ मधुवन कालोनी पहुँची। राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत यह कार्यक्रम जिला समन्वयक दिनेश देशमुख, नरेंद्र पाल कला पथक दल सामाजिक न्याय जिला पंचायत छिंदवाड़ा सहित गायत्री परिवार के परिजनों की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ।

सरहद पर जवानों के लिए भेजी स्वनिर्मित राखियाँ बंदियों को भी बाँधे रक्षासूत्र

इससे पूर्व गायत्री परिवार छिंदवाड़ा के महिला मंडल की बहिनों ने सैनिक कल्याण बोर्ड के माध्यम से अपने हाथों से बनाए गए 2000 रक्षा सूत्र (राखी), शुभकामना संदेश एवं परम पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखित साहित्य सीमा पर सरहदों की रक्षा कर रहे जवानों तक पहुँचाए। उन्होंने जिला जेल में जाकर बंदियों को रक्षासूत्र बाँधे एवं उन्हें जीवन की बुराइयों को त्यागने का संकल्प दिलाया।

देशभक्ति के उल्लास में डूबा केन्द्रीय कारागार, कोटा

कोटा। राजस्थान

13 अगस्त शनिवार को केंद्रीय कारागृह कोटा में गायत्री परिवार की ओर से श्रीमती इंदु जी के नेतृत्व में तिरंगा रैली निकाली गई। कार्यक्रम में आर्केस्ट्रा टीम के साथ गायत्री परिवार की ओर से श्रीमती रेखा पटवा ने प्रज्ञा गीतों के माध्यम से वातावरण को देशभक्ति एवं आत्मिक उत्थान की उमंगों से सराबोर कर दिया। देशभक्ति के तरानों से सभी झूम उठे। श्रीमती रेखा पटवा ने बंदियों को नित्य गायत्री उपासना करने और नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी, संकल्प कराए।

चरित्र उत्थान, पर्यावरण संरक्षण और नशामुक्त भारत का सन्देश

देवास। मध्य प्रदेश

देवास में गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर से तिरंगा रैली निकाली गई, जो सयाजी द्वार, नोवेल्टी चौराहा, नयापुरा भोपाल चौराहा होते हुए पुनः गायत्री शक्तिपीठ पहुँची। नन्हें बच्चे भारत माता, लक्ष्मी बाई, फौजी और भगत सिंह जैसी वेशभूषाओं में रैली में शामिल हुए। श्री प्रमोद निहाले ने समाज को खोखला कर रही नशे की प्रवृत्ति और पर्यावरण संकट की ओर ध्यान आकर्षित कर उनके समाधान के लिए जागरूक होने का आह्वान नगरवासियों से किया। साथ ही एक आदर्श नागरिक बनकर देश की सेवा करने की प्रेरणा दी गई। देवास शाखा के सैकड़ों परिजनों ने इस राष्ट्रीय उत्सव में भागीदारी की

गायत्री शक्तिपीठ देवास द्वारा आयोजित वाहन यात्रा

बुरहानपुर में गायत्री परिवार द्वारा संचालित विद्यालय के बच्चों ने किया राष्ट्रभक्ति का प्रदर्शन

वृक्षारोपण मास चला रहा है वृक्षगंगा अभियान

समर्पण गिरि पहाड़ी पर लगाए 2100 पौधे

कसरावद, खरगौन। मध्य प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार के तहसील संगठन कसरावद द्वारा हरियाली अमावस्या के पावन पर्व पर 2100 से अधिक पौधों का रोपण किया। नगर के गवला रोड़ स्थित शासकीय पहाड़ी, जिसे 'समर्पण गिरि' के नाम से जाना जा रहा है,पर बड़, नीम, पीपल, बिल्व, आम, आँवला, अनार, जायफल, सीताफल, जामुन, रूद्राक्ष, अमलतास, अंजन, शीशम, सप्तपर्णी, खिरनी, अर्जुन, हरड़, बहेड़ा और कई दुर्लभ प्रजातियों सहित 125 प्रकार के पौधे रोपे गए। नगर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के हजारों लोगों ने इस सामूहिक वृक्षारोपण अभियान में भाग लिया।

अभियान का शुभारम्भ पं. मेवालाल पाटीदार द्वारा श्रद्धा संवर्धनयुक्त पौध-पूजन के साथ हुआ। सभी ने जीवन में वृक्षों का महत्त्व समझा, तरु-मिलन किया और उनके संरक्षण के लिए सक्रियता का संकल्प लिया। न्यायाधीश श्री विवेक जैन व श्री राकेश भिड़े सहित जनपद पंचायत के कई गणमान्य अधिकारियों ने इस समारोह में भाग लेकर गायत्री परिवार के जागरूकता अभियान को बल दिया। खरगोन जिला शक्तिपीठ के परिव्राजक रमेश पाटीदार, युवा प्रकोष्ठ के सौरभ मोरे, दीपक बार्चे, डॉ. पुष्पा पटेल, धामनोद शक्तिपीठ के शांतिलाल विश्वकर्मा, बड़वानी के माधव पाटीदार, छोटी खरगोन की सोना कुशवाह के नेतृत्व में यह प्रेरणादायी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

एक महत्त्वाकांक्षी विशाल योजना

गायत्री परिवार द्वारा समर्पण गिरि को लगभग 20 लाख रुपये की लागत से श्रीराम स्मृति उपवन के नाम से हर्बल गार्डन के मॉडल रूप में सँवारा जा रहा है। पौधों की सुरक्षा हेतु पहाड़ी के चारों ओर मजबूत तार फेसिंग की गई है। टपक सिंचाई प्रणाली से पौधों को पानी दिया जाता है। कसरावद शाखा के परिजनों के अनुसार यह पहाड़ी वृक्षतीर्थ और आध्यात्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो रही है। आने वाले समय में सैलानी यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद उठा सकेंगे।

वृक्षगंगा काँवड़ यात्रा

बड़वानी। मध्य प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ बड़वानी ने वृक्षगंगा काँवड़ यात्रा के माध्यम से लोगों को हरीतिमा संवर्धन कर सच्ची शिवभक्ति करने का संदेश दिया। इसका शुभारंभ गायत्री परिवार के दम्पतियों के साथ नगर पालिका अध्यक्ष एवं सांसद प्रतिनिधि द्वारा वृक्षों के पूजन के साथ हुआ। शासकीय कन्या विद्यालय एवं सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के छात्र-छात्राओं ने भी इस यात्रा में भाग लिया। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता और विद्यार्थी अपने हाथों में पर्यावरण संबंधी सद्विचारों की पट्टियाँ हाथ में लेकर चल रहे थे। परिजन वृक्षों की महत्ता का उद्घोष करते रहे।

वृक्षगंगा काँवड़ यात्रा का अनेक स्थानों पर पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया। श्री लखन विश्वकर्मा ने विद्यार्थियों को वृक्षों के महत्त्व की विस्तार से जानकारी दी।

वृक्ष काँवड़ के साथ पर्यावरण जागरूकता का संदेश देते नैष्ठिक परिजन

बृहद् वृक्षारोपण अभियान, 150 पौधे लगाए

मुलताई, बैतूल। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार मुलताई के मार्गदर्शन में ग्राम खेडिकोर्ट से निमनवाडा पहुँच मार्ग पर नीम के 50 पौधे एवं ग्राम पौनी से 2 किलोमीटर की दूरी पर पारसडोह जलाशय के किनारे बने भव्य ताप्ती मंदिर में पौधों का विधिवत पूजन कर 150 पौधों का रोपण किया गया। डॉ. कैलाश वर्मा ने उपस्थित सभी ग्रामीण भाई-बहिनों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि आज बिगड़ते हुए पर्यावरण को संतुलित करने का एकमात्र उपाय पौधारोपण है। उन्होंने कहा कि हमारे जिले के सभी किसान भाइयों को अपने खेतों की मेंड़ एवं खाली पड़ी भूमि पर पेड़ जरूर लगाने चाहिए। उन्होंने कहा कि माँ ताप्ती के तटों को हराभरा करने के उद्देश्य से पौधारोपण किया जाना निश्चित ही एक भागीरथी प्रयास है।

पारसडोह जलाशय के किनारे वृक्षारोपण

पौधारोपण अभियान में जिला एवं मुलताई विकासखण्ड के अधिकांश वरिष्ठ परिजनों ने भाग लिया। आम, जाम, जामुन, आंवला, सागोन, केसिया, सप्तपर्णी आदि के पौधे रोपे गए।

जिले में हर वर्ष रोपे जाते हैं 15000 पौधे

सागर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार की सागर शाखा ने इस वर्ष 15000 पौधों के रोपण का लक्ष्य रखा है। संकल्पित अभियान के अन्तर्गत 28 जुलाई को शासकीय माध्यमिक शाला घोघर बरोदा में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर शीशम, गुलमोहर, कदंब, नीम, बेल, पारिजात आदि प्रजातियों के लगभग 120 पौधे रोपे गए। शासकीय माध्यमिक शाला जमुनिया गॉड सागर में भी इसी प्रकार का वृक्षारोपण कार्यक्रम रखा गया, जिसमें विभिन्न प्रजातियों के लगभग 50 पौधे रोपे गए।

विद्यालय में बच्चों के संग वृक्षारोपण करते परिजन

हरियाली तीज-दिनांक 31 जुलाई को आई.यू.डब्ल्यू. रेलवे कार्यालय सागर में विभिन्न फलदार एवं फूलों वाले लगभग 50 पौधों का रोपण किया। वृक्षारोपण कार्यक्रम में श्री दीपक दुबे का विशेष सहयोग रहा।

वृक्षारोपण अभियान के शेष समाचार ई-संस्करण में अतिरिक्त पृष्ठों पर पढ़ें।

जरूरतमंदों की सेवा-सहायता के लिए अपनाई गई सक्रियता

शिक्षक गरिमा शिविर का प्रभाव

8 लाख रुपये की 19000 अभ्यास पुस्तिकाओं का निःशुल्क वितरण

नासिक। महाराष्ट्र : शान्तिकुञ्ज में चल रही शिक्षक गरिमा शिविरों की शृंखला में भाग लेने वाले नासिक के 31 शिक्षकों पर बड़ा सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। वे स्वयं हर वर्ष इन शिविरों में भाग लेने को उत्सुक हैं, बल्कि कई नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र करने के लिए भी प्रेरित हुए हैं। इस उत्साह का शानदार परिणाम भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भी दिखाई दे रहा है। सबके सहयोग से नाशिक जिले के 4000 विद्यार्थियों को परीक्षा में शामिल कराने का लक्ष्य रखा गया है।

> अभ्यास पुस्तिकाओं पर माँ गायत्री का चित्र, उपासना विधि एवं मंत्र भावार्थ मुद्रित हैं।

बच्चों के व्यक्तित्व विकास के प्रयासों को बल दिया स्थानीय शाखा द्वारा की गई गरीब बच्चों की सहायता ने। गायत्री परिवार द्वारा इस वर्ष लगभग 8 लाख रुपये मूल्य की 19000 अभ्यास पुस्तिकाएँ गरीब बच्चों में निःशुल्क बाँटी जा रही हैं। श्री अमृतभाई पटेल के अनुसार जिले के आदिवासी क्षेत्र कलवण, दिंडोरी एवं सुरगाणा तालुकाओं के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में इन पुस्तकों के वितरण का कार्य चल रहा है। समाचार भेजे जाने तक 14 विद्यालयों में 16000 पुस्तिकाएँ बाँटी जा चुकी थीं। नासिक शहर में ऐसे विद्यालयों में भी ये पुस्तिकाएँ बाँटी जा रही हैं गरीब मजदूरों के बच्चे पढ़ते हैं।

सावन मास में विशिष्ट ज्ञानयज्ञ

2,40,000 शिवभक्तों में निःशुल्क पुस्तिकाएँ बाँटीं, बताया शिव का दर्शन

अहमदाबाद। गुजरात

गायत्री परिवार अहमदाबाद की ज्ञानयज्ञ शाखा ने सावन मास में गुजरात-मध्य प्रदेश के विश्वप्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग-महाकालेश्वर, सोमनाथ, नागेश्वर, ओंकारेश्वर, द्वारिकाधीश धाम में आने वाले भक्तों को शिव का वास्तविक दर्शन समझाने के लिए विशेष अभियान चलाया। इन ज्योतिर्लिंगों पर साहित्य स्टॉल लगाते हुए शिवभक्तों को 'भगवान शंकर क्या हैं?' नामक पुस्तिकाएँ निःशुल्क बाँटी गईं। श्री जयन्ती भाई पटेल ने बताया कि न केवल यह पुस्तिकाएँ बाँटी गईं, बल्कि कार्यकर्त्ताओं की टोलियाँ शिवभक्तों से सम्पर्क करती रहीं और शिव के दर्शन के अनुरूप अपने जीवन को ढालने, बुरी आदतों को छोड़ने और उपासना-साधना से जीवन को श्रेष्ठता की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करती रहीं। इस प्रकार पूरे सावन मास में 2,40,000 शिवभक्तों में निःशुल्क पुस्तिकाएँ बाँटने का लक्ष्य रखा गया था।

> उज्जैन के महाकालेश्वर, सोमनाथ, नागेश्वर, ओंकारेश्वर, द्वारिकाधीश धाम में किया गया ज्ञानयज्ञ

उज्जैन से प्राप्त समाचार के अनुसार महाकाल क्षेत्र में हरसिद्धि मंदिर के पास लगाए गए साहित्य पटल से 30,000 पुस्तिकाएँ बाँटी गईं। इसके साथ ही युगऋषि का चिंतन, वेदों का दिव्य संदेश, सूर्य साधना एवं शिवभक्ति से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें 30 प्रतिशत छूट के साथ उपलब्ध कराई गई थीं। सर्वश्री जयंती नारायण, कृष्णा भाई, रमेश भाई, खोदा भाई बाबू धारा जी एवं उज्जैन के सत्यनारायण प्रजापति, नारायण पटेल, उमा तोमर, गायत्री पाटीदार आदि ने इस ज्ञानयज्ञ के लिए अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

गौ-उत्पाद केन्द्र का शुभारम्भ

केन्द्र का उद्घाटन करने पहुँचे तत्कालीन विधायक

डिहरिया, कटिहार। बिहार

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप डिहरिया द्वारा गौ-उत्पाद स्वावलम्बन केन्द्र का निर्माण किया गया है। माननीय विधायक श्री रामचन्द्र चंद्रवंशी ने इसका अनावरण किया। इस अवसर पर गोबर के 500 दीयों का उपयोग करते हुए दीपयज्ञ भी सम्पन्न कराया गया। श्री योगेश श्रीवास्तव ने बताया कि उनका युवा संगठन बाल संस्कारशाला भी चलाता है। उसकी 18वीं साप्ताहिक कक्षा में बच्चों को प्रकृति की ओर लौटने की प्रेरणा दी गई।

भूली-भटकी मानवता में नया उत्साह और आत्मविश्वास जगा रहे हैं युग पुरोहित

केन्द्रीय कारागार में बंदी बहिनों के लिए एक मासीय पुरोहित प्रशिक्षण सत्र

भोपाल। मध्य प्रदेश

1 अगस्त से भोपाल के केन्द्रीय कारागार में निरुद्ध बहिनों के लाभार्थ युग पुरोहित प्रशिक्षण सत्र आरम्भ हुआ। इसमें 50 बहिनें भाग ले रही हैं। उन्हें गायत्री महिला प्रकोष्ठ भोपाल की बहिनों द्वारा स्वास्थ्य संवर्धन, व्यक्तित्व विकास, सुगम संगीत एवं स्वावलंबन का एक मासीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

सत्र का उद्घाटन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री केदार प्रसाद दुबे, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम दुबे एवं कारा अधीक्षक श्री दिनेश नरगावे ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। श्री के.पी. दुबे ने अपने संदेश में पूज्य गुरुदेव के उद्घोष 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' का उल्लेख करते हुए बंदी बहिनों में आत्मविश्वास और उत्साह जगाया। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को भिन्न योग्यता प्रदान की है, उस योग्यता का विस्तार कर जीवन का उत्कर्ष हमारा लक्ष्य है।

जेल अधीक्षक आदरणीय नरगावे जी ने कहा कि यह प्रशिक्षण आपके जीवन में एक नया प्रकाश लाएगा। इन प्रशिक्षण सत्रों के कारण कारागार का वातावरण आश्रम जैसा बन रहा है।

गायत्री परिवार के ओ.पी. श्रीवास्तव, रामचंद्र गायकवाड, श्रवण गीते, सुरेश कावड़कर, आर.आर. चडोकर, श्रीमती शोभा रस्तोगी, राधा गीते, कला गीतकर, सुशीला चडोकर, रमेश नागर एवं प्रशिक्षण सत्र संयोजक सदानंद आंबेकर उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र में मंचासीन कारा अधीक्षक, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि एवं प्रशिक्षिकाएँ

दिया द्वारा कारा में कार्यशाला का आयोजन

बाराँ। राजस्थान

स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मनाये जा रहे 'राष्ट्र आराधना पखवाड़ा' में भागीदारी करते हुए दिव्य भारत युवा संघ, बाराँ ने जिला कारागार बाराँ में तीन दिवसीय व्यक्तित्व परिष्कार कार्यशाला का आयोजन किया। इसके द्वारा बंदियों को जीवन की उलझन को सुलझाने, उन्हें कुंठाओं से उबारने तथा जीवन की दिशा को पतन से उत्कर्ष की ओर ले जाने के प्रशंसनीय प्रयास हुए।

प्रथम दिन कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए डॉ. तेजकरण गालव ने सद्विचारों को अपनाते हुए नए सिरे से जीवन की शुरुआत करने की प्रेरणा दी। अगले दिन श्री चंद्रप्रकाश सांखला, आयुर्वेदिक विभाग के विष्णुप्रसाद गौतम व दिया सदस्यों ने बन्दियों को नशा मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी एवं व्यसनमुक्त जीवन जीने के उपाय बताए।

अंतिम दिन पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ के माध्यम से कार्यशाला का समापन हुआ। बंदियों ने देवदक्षिणा स्वरूप एक-एक बुराई छोड़ने का संकल्प लिया। इस अवसर पर जिला कारागार अधीक्षक श्री राजेश कुमार योगी ने कहा कि बंदीगण कारागार में सजा काटने की बजाय, आत्मसुधार की मानसिकता से उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हों, यही हमारे प्रयास होते हैं। उन्होंने इन प्रयासों में सहयोग के लिए गायत्री परिवार का आभार व्यक्त किया।

अंत में बंदियों को युग साहित्य भेंट किया गया। तत्पश्चात् वृक्षारोपण कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

आजादी का अमृत महोत्सव

रक्तदान कर युवाओं ने जताई राष्ट्र के लिए उत्सर्ग की भावना

रक्तदान हेतु पंजीयन के लिए उमड़ी भीड़, कई लोग एक साथ रक्तदान करते हुए

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

आजादी के अमृत महोत्सव पर जनपद सुल्तानपुर की गायत्री परिवार शाखा द्वारा सयुंक्त सेवा समिति के सहयोग से केजीएमसी, लखनऊ में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 700 से अधिक रक्तदानी पहुचे, 450 से अधिक ने रक्तदान किया। शेष लोगों को समयाभाव आदि कारणों से भविष्य में रक्तदान हेतु पंजीकृत किया गया।

- 700 रक्तदाताओं का पंजीयन हुआ। समयाभाव के कारण मात्र 450 लोग रक्तदान कर सके।
- उप मुख्यमंत्री, सांसद, विधायक एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने उत्साहवर्धन किया।

शिविर में मुख्यअतिथि के रूप में उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक उपस्थित रहे। सांसद मेनका गांधी, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे, श्री आशीष सिंह, डॉ. तुलिका चंद्रा विभागाध्यक्ष ट्रांस्फुजन विभाग आदि अनेक गणमान्य युवाओं की राष्ट्र के लिए उत्सर्ग की उदात्त भावनाओं के साक्षी बने। जनपद सुल्तानपुर की सभी समितियों के साथ अमेठी, रायबरेली, सीतापुर, लखनऊ जिले की गायत्री परिवार की शाखाओं का भरपूर सहयोग मिला। कार्यक्रम के मुख्य डॉ सुधाकर सिंह ने सभी को धन्यवाद दिया।

बाल सुधार गृह में हुआ प्रेरक कार्यक्रम

जहानाबाद। बिहार

युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद द्वारा बाल सुधार गृह में बाल सुधार से संबंधित कार्यशाला का आयोजन किया गया। वहाँ रह रहे बच्चों के अलावा बाल परिचारी एवं अधिकारी भी इसमें उपस्थित रहे।

भावभरे प्रज्ञा गीत एवं गायत्री मंत्र की प्रार्थना के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ। मुख्य वक्ता कुमार श्रीकांत ने गायत्री मंत्र की उपासना को हृदय में करुणा, संवेदना, ममता को जगाने वाली साधना बताया। उन्होंने कहा कि इन्हीं भाव संवेदनाओं के आधार पर मनुष्य देवमानव और महामानव बनता है और इन्हीं की कमी के कारण जीवन निष्ठुर, नीरस और पतनोन्मुख होता है। उन्होंने कहा कि सुधार के प्रयास आत्मीयता और संवेदनाओं से ओतप्रोत हों तो जीवन को बदलने में देर नहीं लगती।

बच्चों को सत्प्रेरणाएँ देते युग पुरोहित

बाल सुधार गृह के अधीक्षक ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उपस्थित बाल परिचारियों ने भी अपने व्यक्तित्व और विचारों को ऊँचा उठाने के लिए गायत्री उपासना करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रमुख युवा कार्यकर्त्ता रंगेश कुमार, मृणाल कुमार, परिव्राजक मुकेश कुमार, गोपीकृष्ण एवं बाल सुधार गृह के असिस्टेंट डायरेक्टर आलोक कुमार गौतम सहित कई अधिकारी उपस्थित थे।

युवा वृद्धाश्रम में पहुँचे, बुजुर्गों की सेवा की

मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया, मुम्बई ने वृद्धों की सहायता के लिए चलाए जा रहे 'प्रोजेक्ट संवेदना' के अन्तर्गत 2 अगस्त को गुरु नानक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के छात्रों के साथ मातोश्री ओल्ड एज होम, खड़ावली के पास टिटवाला का दौरा किया। वहाँ छात्रों ने घर के 86 दादा-दादी के साथ मिलकर खाना बनाया, परोसा और भोजन किया। जब युवकों ने उन्हें गले लगाया और अपने हाथों से निवाला परोसा तो उनके आँसू छलक पड़े।

आयोजन अत्यंत मनोरंजक और उत्साहवर्धक था। भक्ति एवं मनोरंजन प्रधान फिल्मी गीत-कविता, चुटकुले, नृत्य का दौर चला। सारा वातावरण प्रेम से ओतप्रोत था। छात्रों ने बुजुर्गों की तरह-तरह से सेवा भी की। युगसाहित्य पॉकेट बुक, अखंड ज्योति और मंत्र लेखन पुस्तकें सभी को वितरित की गईं। प्रो. सुचिता शेट्टी ने पूरे आयोजन को प्रेमपूर्ण और भावनात्मक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रक्तदान किया

मथुरा। उत्तर प्रदेश : ''तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित। चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।'' इसी भाव के साथ मथुरा में गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ ने रक्तदान शिविर आयोजित किया। युवा प्रकोष्ठ के अनेक कार्यकर्त्ताओं ने रक्तदान किया। युवा प्रकोष्ठ संयोजक श्री संजय शर्मा ने रक्तदाताओं का अभिनन्दन करते हुए कहा कि अगर किसी का दान किसी की जान बचाता है तो वह दान महान है।

जिस घर में स्त्रियाँ सुसंस्कारी, मृदुभाषी एवं परिश्रमी होती है, उस घर में न दारिद्र्य प्रवेश करता है न विग्रह।

नारी सशक्तीकरण वर्ष के प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

अलवर। राजस्थान

नारी सशक्तीकरण वर्ष के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ अलवर पर 5 दिवसीय महिला कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। 3 अगस्त को प्रातः इसका शुभारम्भ डॉ. नंदिनी शर्मा (स्त्री रोग विशेषज्ञ, नवजीवन हॉस्पिटल) एवं गायत्री शक्तिपीठ की मुख्य प्रबंध ट्रस्टी डॉ. सरोज गुप्ता की उपस्थिति में हुआ। पूर्व पंजीकृत 50 महिलाओं एवं 10 भाइयों की उपस्थिति रही। इस शिविर को सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से सुश्री दीना बहिन त्रिवेदी, श्रीमती सीतांजलि साहू, श्रीमती अनिता काँवड़कर की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली एवं उनके सहायक श्री जगन्नाथ भंज व श्री मनोज जी पहुँचे थे।

अलवर में शिविर संचालन कर रही सुश्री दीना त्रिवेदी की टोली

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ लखीमपुर खीरी में 28 जुलाई से 1 अगस्त 2022 की तिथियों में आयोजित नारी सशक्तीकरण शिविर बहुत उत्साहवर्धक रहा। इसमें लखीमपुर खीरी, खमरिया व आसपास के क्षेत्रों की बहिनों ने बहुत उत्साह से भाग लिया। शिविर में 60 से 65 बहिनों ने भागीदारी रही, जिनकी 15 टोलियाँ बनाई गई हैं। प्रशिक्षित बहिनों की टोलियों ने संगठित होकर अपने क्षेत्र में घर-घर गायत्री यज्ञ, संस्कार, सप्त आंदोलन, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, बाल संस्कार शाला आदि आन्दोलनों को चलाने एवं घर-घर साहित्य पहुँचाने का संकल्प लिया है।

खीरी लखीमपुर में प्रशिक्षण ले रही बहिनों के उत्साह की झाँकी

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए समर्पित व्यक्तित्व

शाहपुरा, भीलवाड़ा। राजस्थान

तहसील शाहपुरा में ग्राम रायपुर निवासी श्री सुवालाल सुथार उन चलती-फिरती शक्तिपीठों में से एक हैं, जिनकी अपेक्षा परम पूज्य गुरुदेव ने मिशन के समर्पित कार्यकर्त्ताओं से की है। 82 वर्ष की उम्र में भी उनका जीवन पूरी तरह से बाल निर्माण के लिए समर्पित है। आज भी वे तहसील के अनेक गाँवों की पाठशालाओं में जाकर कई प्रकार के कार्यक्रम सम्पन्न कराते हैं, जिनके लिए विद्यालयों ने उन्हें सम्मानित भी किया है।

82 वर्ष की उम्र में भी कई गाँवों में जाकर बच्चों को प्रेरणा और प्रशिक्षण दे रहे हैं।

श्री सुवालाल सुथार अनेक विद्यालयों में स्वयं पहुँचकर वहाँ बाल संस्कार शालाएँ चलाते हैं। बच्चों के जन्मदिन आदि संस्कार मनाना, उन्हें भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल होने के लिए प्रेरित करना और उसमें अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करने की प्रेरणा देना उनकी नियमित दिनचर्या का अंग रहा है। उनकी प्रेरणा से सैकड़ों विद्यार्थी गायत्री उपासना एवं गायत्री मंत्र लेखन साधना से जुड़े और तरह-तरह की बुराइयों से दूर रहने का संकल्प निभा रहे हैं।

श्री सुवालाल जी के नैष्ठिक प्रयासों को सभी का शानदार सहयोग मिला और क्षेत्र में वृक्षारोपण, नशामुक्ति जैसे अभियानों में सक्रियता बढ़ी है। उनकी प्रेरणा से बच्चों के संस्कार ही नहीं बदल रहे, अपितु उन सभी गाँवों में भी नवजागृति आ रही है। एक-एक गाँव के पचासों गाँवों में घर-घर यज्ञ-संस्कार की परम्परा चल पड़ी और देवस्थापनाएँ हुई हैं।

महिला एवं बाल विकास विभाग के सहयोग से आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण

सिरोही। राजस्थान

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

गायत्री शक्तिपीठ सिरोही पर महिला एवं बाल विकास विभाग के सहयोग से आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी आयोजित हुई। महिला एवं बाल विकास अधिकारी एवं सुश्री उत्तम की उपस्थिति में गायत्री परिवार की विशेषज्ञ बहिनों ने गर्भस्थ शिशु के समग्र विकास में पुंसवन संस्कार की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री संजय कुमार वर्मा ने 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान की जानकारी दी। इन्दिरा खत्री ने शिशु के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास की प्रक्रिया और उस पर पुंसवन संस्कार के प्रभाव की जानकारी दी। उर्मिला खण्डेलवाल ने गर्भिणी की आदर्श दिनचर्या बताई। टीना देवी एवं शालिनी वर्मा ने अन्य जानकारियाँ प्रदान कीं।

यह शिविर गायत्री परिवार के संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन अभियान के साथ शासकीय योजनाओं को भी बल प्रदान करने वाला था। महिला एवं बाल विकास की अधिकारी बहिनों ने गायत्री परिवार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए समाज में संस्कारों की पुण्य परम्परा को प्रचलित करने का आश्वासन दिया।

शक्तिपीठ पर चल रहा आँगनबाड़ी की कार्यकर्त्ता बहिनों का प्रशिक्षण शिविर

कन्या कौशल विकास प्रशिक्षण सत्र

5 माह के प्रशिक्षण से 20 बहिनों ने दक्षता हासिल की

कोठी, सतना। मध्य प्रदेश

भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के अन्तर्गत जन शिक्षण संस्थान सतना द्वारा गायत्री शक्तिपीठ कोठी पर 5 माह की अवधि का सिलाई प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। अक्टूबर-21 से मार्च-22 तक चले इस प्रशिक्षण सत्र का 20 युवतियों ने लाभ लिया। 7 जून 2022 को शक्तिपीठ पर आयोजित एक कार्यक्रम में जन शिक्षण संस्थान के अधिकारी डॉ. अजय तिवारी एवं उनके साथियों ने शक्तिपीठ संरक्षक श्री केदार प्रसाद गुप्ता एवं अन्य गणमान्यों की उपस्थिति में प्रशिक्षण प्राप्त युवतियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। श्रीमती खुशबू सोनी ने पाँच माह तक प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा प्रदान की।

गाँव-गाँव बाल संस्कार शालाएँ

मंदसौर। मध्य प्रदेश

मंदसौर में बाल संस्कार शालाओं के माध्यम से पूरी तन्मयता के साथ बच्चों के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक व शारीरिक विकास के प्रयास हो रहे हैं। श्री शंकरलाल मालवीय ने बताया कि वहाँ 20 से अधिक बाल संस्कार शालाएँ संचालित हैं। श्री पन्नालाल मालवीय के मार्गदर्शन, श्री नरेश त्रिवेदी और के. के. दुबे के सहयोग से गाँव-गाँव यह अभियान पहुँच रहा है। उनमें भाग लेकर सैकड़ों बच्चे चरित्र विकास का अभ्यास करते हुए, प्रेरणाएँ हृदयंगम करते उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

प्रशंसनीय नई पहल ...

नव निर्वाचित सरपंच और पंचों को युग निर्माणी सत्संकल्पों के आधार पर ग्रामहित की शपथ दिलाई

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार की देवास शाखा की प्रेरणा एवं प्रयासों से ग्राम कानकुंड में एक प्रशंसनीय पहल हुई। गाँव की नवनिर्वाचित सरपंच श्रीमती कुंता बाई, उप सरपंच श्रीमती निर्मला बाई, सचिव राजेन्द्र सोलंकी और 13 पंचों ने गायत्री यज्ञ कर पौधारोपण किया और फिर बिना किसी भेदभाव के पूरी ईमानदारी के साथ ग्राम के सर्वांगीण विकास की शपथ ली।

मीडिया प्रभारी विक्रम सिंह चौधरी के अनुसार युवा प्रकोष्ठ के श्री प्रमोद निहाले ने गायत्री परिवार के अनेक गणमान्य एवं ग्रामवासियों की उपस्थिति में यह शपथ दिलाई। यह शपथ युग निर्माण सत्संकल्पों के आधार पर दिलाई गई। इसमें ईश्वर को सर्वव्यापी और न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन का पालन करने, देश के संविधान के प्रति अटूट निष्ठा रखने, पूर्ण ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ ग्राम विकास के लिए प्रयत्न शील रहने, सबके हित में अपना हित मानने जैसी शब्दावली का प्रयोग किया गया था।

शपथ विधि से पूर्व सभी ने यज्ञ किया और फिर गायत्री परिवार के पौधारोपण अभियान के प्रति अपनी गहन आस्था व्यक्त करते हुए त्रिवेणी रोपण भी किया।

सरपंच एवं पंच शपथ ग्रहण करते और नीचे वृक्षारोपण करते हुए

अंग्रेज व विदेशियों का सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार कराया

हल्दूचौड़। उत्तराखण्ड

भारतीय संस्कृति से प्रभावित अनेक विदेशी पर्यटकों ने परम पूज्य गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के सूत्रों को हृदयंगम करते हुए सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार कराया। हल्दूचौड़ के होटल निलेश इन में पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ यह संस्कार समारोह आयोजित हुआ। 24 महिलाओं और 20 पुरुषों ने यज्ञोपवीत संस्कार कराया और दीक्षा ली।

यह कार्यक्रम गायत्री शक्तिपीठ हल्दूचौड़ की टोली ने सम्पन्न कराया। संस्कार कराने वालों में स्लोवेनिया के काटजे, मोजका, पेट्रा, पैराडाइज़ डीसी की क्रिस लॉगले, फ्रांस के अनास सहित कई देशों के लोग थे। सभी गायत्री मंत्र का दुपट्टा ओढ़कर पूरे भक्तिभाव में डूबे रहे। प्रेरणाप्रद टिप्पणियों ने मिशन के साहित्य के प्रति उनकी रुचि बढ़ाई।

गायत्री की दीक्षा लेते व यज्ञोपवीत संस्कार कराते विदेशी नागरिक

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

कई पीढ़ियों के प्रेरणास्रोत थे स्व. श्री धीरेन्द्र प्रसाद बिरही

गिरिडीह। बिहार

परम पूज्य गुरुदेव के अनन्य एवं समर्पित शिष्य, गायत्री परिवार गिरिडीह के आधार स्तम्भ, एक आदर्शवादी शिक्षक, कई पीढ़ियों के प्रेरणास्रोत श्री धीरेन्द्र प्रसाद विरही 84 वर्ष की उम्र में दिनांक 7 अगस्त 2022 को गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। वे अपने सरकारी उच्च विद्यालय पचम्बा-गिरिडीह को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के अनुरूप ढालने के लिए जाने जाते थे। उनके प्राध्यापक रहते विद्यालय का पुस्तकालय पूज्य गुरुदेव के साहित्य से भरा रहा और हर दीवार पर लिखा गुरुदेव का सद्वाक्य बच्चों के मन-मस्तिष्क में उत्कृष्ट आदर्शों का संचार करता रहा। उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन पाकर आज उनके अनेक शिष्य विभिन्न क्षेत्रों में पदस्थापित होकर अपनी सेवा दे रहे हैं।

श्री रमेशचंद्र लबानिया, नगर, भरतपुर। राज.

नगर शहर के 63 वर्षीय निष्ठावान कार्यकर्त्ता श्री रमेशचंद्र लवानिया का 7 अगस्त को देहावसान हो गया। वे प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। संस्कृत के विद्वान स्व. श्री रमेशचंद्र जी ने युगचेतना के विस्तार के लिए अथक परिश्रम किया था।

श्री देव सिंह मंडावी, कांकेर। छत्तीसगढ़

सन् 1958 में मथुरा में आयोजित सहस्र कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में दीक्षित प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री देव सिंह मंडावी का 25 मई 2022 को देहावसान हो गया। वे अंतिम श्वांस तक साइकिल से मिशन का प्रचार-प्रसार करते रहे। गायत्री प्रज्ञा मंदिर निर्माण कराने में उनका विशेष योगदान रहा।

श्री दुधेराम साहू, दुर्ग। छत्तीसगढ़

गायत्री प्रज्ञापीठ कुम्हारी के अत्यंत सक्रिय सदस्य श्री दुधेराम साहू 3 जुलाई 2022 को 58 वर्ष की आयु में परमचेतना में विलीन हो गये।

व्यावसायिक नगरी दुबई में आध्यात्मिक चेतना का उन्नयन

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का संक्षिप्त दुबई प्रवास

20 घण्टे की यात्रा

- 100 परिजनों से व्यक्तिगत भेंट
- परिजनों के यहाँ देवस्थापनाएँ
- रेडियो साक्षात्कार
- पत्रकार- प्रबुद्धों से चर्चा
- कॉन्सुलेट जनरल से मुलाकात
- इंडिया क्लब में दीप महायज्ञ

दुबई संयुक्त अरब अमीरात का सर्वाधिक लोकप्रिय व्यावसायिक शहर है। वहाँ प्रवासी भारतीय उच्च स्तर पर व्यवसाय अथवा बैंकिंग का कार्य करते हैं। गायत्री परिवार के परिजन भी वहाँ बड़ी संख्या में रहते हैं। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थी प्रशान्त एवं ज्योति, सलाउद्दीन भट्ट, जितेन्द्र-अनुजा, प्रियंका बाल्दी, मनीषा, कौशल, स्वाती सहित दर्जन भर युवा वहाँ योग, आयुर्वेद आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

दुबई में परिजनों द्वारा यज्ञ, दीपयज्ञ, संस्कार आदि कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। उनके द्वारा पिछले दो वर्षों से ऑनलाइन कक्षाएँ भी चलाई जा रही हैं। इन कक्षाओं में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी, आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और शान्तिकुञ्ज के अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता जुड़कर सामयिक संदेश देते रहे हैं।

दुबई के परिजनों को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का भी भरपूर सान्निध्य मिला। वे जब भी दुबई एयरपोर्ट से होकर गुजरते तब उनकी श्री नीरज गोयल एवं श्री चन्द्रेश अग्रवाल सहित कई परिजनों से चर्चा होती रही है। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी से परिजनों का विशेष आग्रह था कि वे दुबई आएँ और उनके प्रयासों को प्रोत्साहित करें। यह सुयोग 19 जुलाई 2022 को बना। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी कनाडा जाते समय मात्र 20 घण्टे के संक्षिप्त प्रवास पर दुबई पहुँचे। इन 20 घण्टों की उपलब्धियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण रहीं।

दुबई हवाई अड्डे पर डॉ. चिन्मय जी के स्वागत के लिए पहुँचे प्रमुख परिजन

भव्य स्वागत - डॉ. चिन्मय जी का दुबई हवाई अड्डे पर भव्य स्वागत हुआ। अनेक कार्यकर्त्ता उनके स्वागत हेतु वहाँ उपस्थित थे। कार्यक्रमों की सघनता एवं समय की अत्यल्पता को ध्यान में रखते हुए शान्तिकुञ्ज से पूर्व तैयारी हेतु श्री राजकुमार वैष्णव 18 जुलाई को ही दुबई पहुँच गए थे।

इण्डिया क्लब में दीपयज्ञ व युवा पथ प्रदर्शन

आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इण्डिया क्लब में आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए

मुख्य कार्यक्रम दुबई में इंडिया क्लब के मुख्य सभागार में हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के स्वागत एवं परिचय के बाद दीप महायज्ञ का आयोजन हुआ, जिसे श्री प्रशान्त जी एवं श्री राजकुमार वैष्णव ने सम्पन्न कराया। दुबई के विकास एवं सुख, शांति के लिए प्रार्थना की गई एवं महामृत्युञ्जय मंत्र की आहुतियाँ दी गईं।

डॉ. चिन्मय जी ने अपने उद्बोधन में दुबई के परिवेश एवं देश को ध्यान में रखते हुए युवाओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने सुअवसर के सदुपयोग एवं जीवन लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पूज्यवर द्वारा दिये सूत्रों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की डॉ. ज्योति एवं श्री सुनील जगेटिया ने कार्यक्रम का संचालन बड़े ही अनोखे अंदाज में किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में आने वाले परिजनों से व्यक्तिगत मुलाकात की।

भारत के महावाणिज्यदूत से मुलाकात

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों को इंडियन काउंसुलेट जनरल डॉ. अमन पुरी से मिलने का अवसर मिला। उन्हें शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयंती का प्रतीक चिह्न भेंट किया गया एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय पधारने का आमंत्रण दिया गया। माननीय डॉ. अमन पुरी ने भी आदरणीय डॉ.चिन्मय जी का सम्मान किया। इस अवसर पर श्री चन्द्रेश जी, श्री सुनील जगेटिया, ज्योति एवं प्रशान्त साथ थे।

मान. डॉ. अमन पुरी को पुष्पगुच्छ भेंट करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

रेडियो साक्षात्कार एवं पत्रकार-प्रबुद्धजन वार्ता

डॉ. चिन्मय जी ने कहा- ''हम अच्छे इंसान बनाते हैं।''

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का रेडियो एफएम 100.3 में साक्षात्कार हुआ, जिसका सीधा प्रसारण किया जा रहा था। इसमें दुबई में कार्य करने वाले नवागन्तुक युवाओं का भविष्य बेहतर बनाने के सम्बन्ध में बड़े महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछे गए। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के अत्यंत सरल, लेकिन सटीक और व्यावहारिक उत्तरों से साक्षात्कारकर्त्ता श्री विवेक सानिल एवं सोबिया खान बहुत प्रभावित हुए।

एफएम रेडियो के स्टूडियो में साक्षात्कार

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि आज प्रगति का मापदण्ड पैसा, पद, प्रतिष्ठा हो गया है। इन्हीं को पाने की होड़ लगी है। इस होड़ में हमारे पास जो कुछ है उसे भी हम गँवाते चले जा रहे हैं। मन का सुकून, दिल की शान्ति मुट्ठी से रेत की तरह फिसल रही है। भागती-दौड़ती दुनिया के बीच हमें अपने लिए भी समय निकालना चाहिए और जो हमारे पास है उसे सँभालने का प्रयास करना चाहिए। हमारे लिए भविष्य के सपने और भूतकाल की यादों में ही खोये रहने की अपेक्षा वर्तमान को सँवारना बेहतर है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विषय में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि हम परम पूज्य गुरुदेव की अवधारणा के अनुरूप अच्छे इंसान बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारे विद्यार्थी इण्टर्नशिप में अनिवार्य रूप से समाजसेवा करते हैं। उन्होंने कहा कि अच्छे इंसान बनकर किसी दुखियारे के आँसू पौंछने में जो सुकून है वह धन-दौलत पाने में नहीं है।

पत्रकार एवं गणमान्यों से चर्चा

पत्रकार-प्रबुद्ध जनों से चर्चा : इण्डिया क्लब में दीपयज्ञ के अवसर पर पत्रकार वार्ता में बीबीसी, जी कनेक्ट, खलीज टाईम्स जैसे पत्रकारों से तथा बहुत-सी प्रभावशाली हस्तियों व स्थानीय सौजन्यकर्त्ताओं से चर्चा हुई।

परिजनों के घर देवस्थापनाएँ

कार्यक्रमों की सघनता के कारण दिनभर व्यस्तता रही। बीच-बीच में परिजनों के घर भेंटवार्ता एवं देव स्थापनाओं के कार्यक्रम रखे गए। इस क्रम में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने लगभग 100 परिजनों से मुलाकात की। अनेक परिजनों के यहाँ देवस्थापनाएँ कराई गईं। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दुबई एयरपोर्ट से सीधे डॉ. कविता एवं डॉ. गौरव के घर पहुँचे, जहाँ दो दर्जन परिजनों से भेंट हुई एवं उनके घर देवस्थापना कराई गई।

दोपहर में मरीना में स्वाति अंजनेय, डिस्कवरी गार्डन में आयुषि, जेएलटी में चन्द्रेश जी, श्री राजेश जी, तृप्ति प्रवीण जायसवाल के घर पहुँचे-देवस्थापना की। इंडिया क्लब में हुए कार्यक्रम के बाद श्री सुनील अविनाश जगेटिया के निवास पर देवस्थापना, परिवार एवं मित्र मिलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

डबलिन (आयरलैण्ड) और लंदन (इग्लैण्ड) में विशाल दीपयज्ञ एवं कार्यकर्त्ता सम्मेलन

दुबई और कनाडा (समाचार पृष्ठ 7 पर) के बाद आदरणीय डॉ. चिन्मय जी यूनाइटेड किंगडम पहुँचे। वहाँ उन्होंने आयरलैण्ड की राजधानी डबलिन और इंग्लैण्ड की राजधानी लंदन में विशाल दीपयज्ञ एवं कार्यकर्त्ता सम्मेलनों को संबोधित किया। दोनों ही कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के परिप्रेक्ष्य में आयोजित किए गए थे।

डबलिन के वैदिक हिन्दू कल्चरल सेन्टर में 30 जुलाई को दीपयज्ञ हुआ। आयरलैंड में भारतीय राजदूत माननीय श्री अखिलेश मिश्रा जी सपत्नीक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। वहाँ के सक्रिय कार्यकर्त्ता सर्वश्री सुधांशु जी, सागर, निकुंज, सुरेश बालकिशन-मधुरिमा, मानवलोक, मनोज कुमार, आशुतोष सक्सेना, श्वेतांशु, गौरव चौधरी, कुमुद, हर्षिल पटेल, अनुज आदि परिजनों के प्रयास और पूर्व तैयारियों हेतु 26 जुलाई को ही डबलिन पहुँच चुके शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री राजकुमार वैष्णव व श्री दिनेश पटेल के कुशल मार्गदर्शन में कार्यक्रम शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। सैकड़ों लोगों तक मिशन का संदेश पहुँचा।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने अपने संदेश में भारतीय संस्कृति में गायत्री एवं यज्ञ की

डबलिन के दीपयज्ञ में सन् 2023 में डबलिन में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ कराए जाने की घोषणा की गई।

डॉ. चिन्मय जी प्रायः सभी प्रमुख कार्यकर्त्ताओं से मिले, उन्हें देवस्थापना चित्र भेंट कर सम्मानित किया।

महिमा बताई। उन्होंने प्रवासी भारतीयों को अपने बच्चों को अपनी संस्कृति एवं संस्कारों के प्रति जागरूक एवं निष्ठावान बनाए रखने के लिए प्रेरित किया।

भारतीय राजदूत श्री मिश्रा जी शान्तिकुञ्ज आ चुके हैं। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला एवं वेद, पुराण, गीता के कई श्लोकों के साथ भारतीय संस्कृति की गौरव-गरिमा समझाई।

कार्यक्रम स्थल को बड़े सुन्दर ढंग से सजाया गया था। 251 स्टील के दीपकों से '**शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयंती**' लिखा गया। बैनर, पोस्टर, झण्डों के सहारे पूरा वातावरण गायत्रीमय हो गया था। दीपयज्ञ का सरस संचालन शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री ओंकार पाटीदार, श्री राजकुमार वैष्णव एवं श्री दिनेश पटेल की टोली ने किया। निर्मलाबेन भाना भाई, हेमाबेन पटेल, कपिला बेन, रजनी भाई, कोकिलाबेन दिनकर भाई, किरण भाई-सुलोचना बेन सहित गायत्री चेतना केन्द्र लेस्टर की विशिष्ट भूमिका थी।

नागरेचा हॉल, आईफोर्ड, लंदन में आयोजित शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती दीपयज्ञ

लंदन में विशाल जनसभा

लंदन में आईफोर्ड के सुप्रसिद्ध नागरेचा हॉल में शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में विशाल संगोष्ठी एवं दीपयज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के लिए कार्यकर्त्ताओं में बहुत उत्साह दिखाई दिया। दूर-दूर के शहरों से लोग आए।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने वर्तमान की चुनौतियों तथा कार्यकर्त्ताओं के बढ़ते दायित्वों की चर्चा की। इंग्लैण्ड के लोगों की श्रद्धा-सक्रियता की सराहना करते हुए उन्हें जन्मशताब्दी वर्ष -2026 से जुड़े दायित्व समझाये, नारी सशक्तिकरण वर्ष के लक्ष्य पर चर्चा हुई। नागरेचा हॉल के प्रमुख श्री विनोदभाई, श्री हसुभाई, उर्मीबेन का सम्मान किया गया। उन्होंने ही हॉल एवं भोजन प्रसाद की व्यवस्था बनाई थीं

डबलिन में हुए दीपयज्ञ के मंच पर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं राजदूत श्री अखिलेश मिश्रा जी, दायें परिजनों के यहाँ देवस्थापनाएँ

कनाडा में प्रथम चेतना केन्द्र 'शान्तिवन आश्रम' के लिए भूमिपूजन हुआ

कनाडा में अखिल विश्व गायत्री परिवार की वेस्ट ओंटारियो शाखा के प्रयासों से 4173 बाउण्ड्री रोड सण्ड्रिज में 'शान्तिवन आश्रम' का निर्माण किया जा रहा है। 24 जुलाई को 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ आश्रम निर्माण के लिए भूमिपूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। भूमिपूजन के लिए शान्तिकुञ्ज की प्रखर प्राण ऊर्जा लेकर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी कनाडा पहुँचे थे। पूर्व से ही अमेरिका के प्रवास पर

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी द्वारा भूमिपूजन

पहुँचे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रो. विश्वप्रकाश त्रिपाठी एवं श्री ओंकार पाटीदार की टोली ने 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं भूमिपूजन का कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

गायत्री महायज्ञ के आरम्भ में भव्य कलश यात्रा निकाली गई। यज्ञ में 450 यजमानों की भागीदारी रही। ओजस्वी स्वर-संगीत से सजी यज्ञ की महिमा, महाकाल संकीर्तन आदि ने सभी श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आदरणीय श्री चिन्मय पड्या ने यज्ञ की महिमा समझाते हुए कहा कि यज्ञ प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। स्वार्थ-संकीर्णता को त्याग कर सबके हित में अपना हित समझने और सबकी भलाई के लिए सक्रिय रहने का नाम यज्ञ है। जहाँ यज्ञ नहीं होता, वहीं तरह-तरह के विकार व संकट उत्पन्न होते हैं। सभी याजकों ने यज्ञभाव का सुन्दर परिचय देते हुए शान्तिवन आश्रम के विकास के लिए अपने सहयोग के संकल्प भी लिए।

शान्तिवन आश्रम

शान्तिवन आश्रम टोरंटो से 3 घण्टे की वाहन यात्रा की दूरी पर अद्भुत रमणीक प्राकृतिक वातावरण में लगभग 200 एकड़ भूमि में बनाया जा रहा है। वेस्ट ओंटारियो शाखा ने भूमि सन् 2019 में खरीदी थी, लेकिन कोरोना की प्रतिकूलताओं से उबरने के बाद उसके भूमिपूजन का सुयोग अब बना।

मंत्रलेखन पुस्तिकाओं का पूजन

शान्तिवन आश्रम निर्माण के लिए भूमिपूजन के समय कनाडा के परिजनों द्वारा हस्तलिखित गायत्री मंत्र की पुस्तिकाओं का भी पूजन किया गया और उन्हें शिला पूजन के साथ स्थापित किया गया।

गायत्री परिवार वेस्ट ओंटारियो के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं की टोली

108 कुण्डीय यज्ञ का संचालन करती शान्तिकुञ्ज की टोली

यूथ कैम्प

एकान्त वन में 65 युवाओं ने की आत्मोत्थान की विविध साधनाएँ

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पड्या जी 20 जुलाई से 27 जुलाई तक कनाडा प्रवास पर थे। उनके सान्निध्य में शान्तिवन आश्रम के भूमिपूजन से पूर्व दो दिवसीय युवा शिविर 'यूथ स्प्रिचुअल रीट्रीट' का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

यूथ स्प्रिचुअल रीट्रीट में 65 युवाओं की भागीदारी रही। इसकी विषयवस्तु थी-सुनसान के सहचर। शिविर स्थल भी विषयवस्तु के अनुरूप एकान्त में था। सभी प्रतिभागी टेंट में रहे। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के आत्मीयतापूर्ण मार्गदर्शन एवं निर्देशन में ध्यान, खेलकूद, कैम्प फायर जैसे कार्यक्रम सम्पन्न हुए। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने 'अंतर्जगत की यात्रा' विषय पर मार्मिक उद्बोधन देते हुए शिविरार्थियों में उनकी आत्मिक विभूतियों को अनावृत करने की जिज्ञासा जगाई। वाद-विवाद प्रतियोगिता बहुत उत्साहवर्धक थी। सभी प्रतिभागियों ने इसमें भाग लेकर अपने चिन्तन की उत्कृष्टता का परिचय दिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी युवा पथ प्रदर्शन करते हुए एवं कैम्प फायर का दृश्य

हिन्दू हैरिटेज सेण्टर मिसिसागा में भारतवासियों को युग संदेश दिया

अखिल विश्व गायत्री परिवार टोरंटो के प्रयासों से टोरंटो के हिन्दू हैरिटेज सेण्टर, मिसिसागा में 'आध्यात्मिक शक्तियों का आधार श्रद्धा' विषय पर डॉ. चिन्मय जी का व्याख्यान हुआ। लगभग 350 श्रद्धालु श्रोताओं ने उनके मार्मिक संदेश का लाभ लिया।

भव्य स्वागतोपरांत डॉ. चिन्मय जी ने मंदिर के मुख्य पंडित शास्त्री जी को गायत्री परिवार वेस्ट ओंटारियो की गतिविधियों से अवगत कराया। प्रो. त्रिपाठी जी ने डॉ. चिन्मय जी का परिचय दिया। उद्बोधन से पूर्व श्री ओंकार पाटीदार जी के प्रज्ञागीतों ने सभी को भावविभोर कर दिया। संपूर्ण कार्यक्रम जीवन में नवस्फुरणा जगाने वाला था।

हिन्दू हैरिटेज सेण्टर में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का उद्बोधन

वॉटरलू विश्वविद्यालय के साथ एमओयू एवं शिक्षकों के बीच उद्बोधन

25 जुलाई को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी वॉटरलू विश्वविद्यालय पहुँचे। वहाँ के प्रमुख अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा के बाद दोनों विश्वविद्यालयों के बीच एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) हुआ। देसंविवि के प्रतिकुलपति जी ने वॉटरलू विश्वविद्यालय में 'सेण्टर फॉर स्प्रिचुअलिटी एण्ड विज़डम प्रैक्टिसेस' का उद्घाटन भी किया।

तत्पश्चात् वॉटरलू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रेनिसन यूनिवर्सिटी कॉलेज पहुँचे, जहाँ उन्होंने कॉलेज के शिक्षकों के बीच 'मानवीय उत्कृष्टता' विषय पर व्याख्यान दिया। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने भारतीय संस्कृति में निहित मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए उन्हें मानव जीवन की सही व्याख्या बताया। परम पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व विकास के सर्वमान्य सूत्रों को समझाते हुए उन्होंने कहा कि सही मायनों में मानव वह है जो सबके हित में अपना हित देखता और सबके प्रति दया, उदारता, सेवा का भाव रखता है।

एम.ओ.यू. के दस्तावेजों का आदान-प्रदान

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय का परिचय कराते हुए उसे उत्कृष्ट मानवों को गढ़ने की टकसाल बताया। आरम्भ में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. वेंडी फ्लेचर ने डॉ. चिन्मय जी का स्वागत किया। प्रोफेसर एमेरिटस डॉ. डारोल ब्रायंट द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ सभा का समापन हुआ।

टोरंटो, मिल्टन, वॉटरटाउन, ब्राम्पटन और स्कारबोरो में कार्यकर्त्ता गोष्ठियाँ

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने कनाडा प्रवास का आरम्भ दिनांक 20 जुलाई 2022 को टोरंटो से किया। कोरोना काल के लम्बे अन्तराल के बाद शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों के प्रवास से सभी में खुशी की लहर छा गई। परिजनों ने डॉ. चिन्मय जी का भव्य स्वागत किया। तत्पश्चात वे टोरंटो के मिल्टन और वाटरटाउन क्षेत्र में कार्यकर्ता भाई-बहनों से मिले, उन्हें गुरुसत्ता के प्यार और आशीर्वाद की अनुभूतियाँ कराईं।

अगला प्रवास ब्राम्पटन और स्कारबोरो शहर का रहा। प्रवास के अंतिम दिनों में किचनेर और मिल्टन शहर गए। वहाँ उन्होंने सामुदायिक केन्द्र में दीपयज्ञ के साथ कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया।

सभी कार्यक्रमों में पतनोन्मुख मानवता को सही राह दिखाने के लिए युगशक्ति गायत्री को घर-घर पहुँचाने का आह्वान किया गया। युग परिवर्तन के असाधारण सौभाग्यशाली ऐतिहासिक क्षणों की याद दिलाई गई।

बायें ब्राम्पटन और दायें मिल्टन में आयोजित हुई कार्यकर्त्ता गोष्ठियाँ

अमेरिका

हेमेट शहर के ॐ स्पिरिचुअल सेंटर में भाव प्रतिष्ठा

हेमेट। संयुक्त राज्य अमेरिका

7 अगस्त 2022 को हेमेट, केलिफोर्निया में ॐ स्पिरिचुअल सेंटर में भाव प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही कैलीफोर्निया, अमेरिका में अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के एक और केन्द्र का शुभारंभ हुआ। 3 दिवसीय कार्यक्रम में लगभग 200 लोगों ने भागीदारी की।

कार्यक्रम का शुभारंभ 5 अगस्त को सायं दीपयज्ञ के साथ हुआ। 6 अगस्त को प्रातः 8 बजे से 24 घण्टे का संगीतमय अखण्ड गायत्री महामंत्र जप रखा गया था। 7 अगस्त को अखण्ड जप की पूर्णाहुति के साथ ही भाव प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज से श्री विश्व प्रकाश त्रिपाठी, श्री जयराम मोटलानी एवं श्रीमती नीलम मोटलानी की टोली ने कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

श्री जयराम मोटलानी एवं श्रीमती नीलम मोटलानी दम्पति इस केन्द्र के सुचारू रूप से संचालन हेतु शान्तिकुञ्ज से भेजे गए हैं। केन्द्र की स्थापना में हेमेट के डॉ. राकेश गुप्ता, डॉ. नीलम गुप्ता, अल्का पटेल, मीनाक्षी पटेल, विनय भाई, श्रीमती ऊषा, लॉस एंजिल्स से श्री इक्ष्वाकु ओझा, श्री राजू भाई आदि परिजनों का विशेष योगदान है। गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना का प्रचलन बढ़ाते हुए विदेशी भूमि पर अपने बच्चों और युवाओं को भारतीय संस्कृति से जोड़े रखने के प्रयासों के अन्तर्गत इस केंद्र की स्थापना की गई है।

भाव प्रतिष्ठा समारोह में उपस्थित शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों के संग हेमेट प्रमुख कार्यकर्त्ता

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

इससे पूर्व शान्तिकुञ्ज से हेमेट पहुँचे परिव्राजक दम्पति श्रीमती नीलम एवं श्री जयराम मोटलानी की उपस्थिति में गुरुपूर्णिमा पर्व विशेष उत्साह के साथ मनाया गया। यह पर्व 11 कुण्डीय यज्ञ के माध्यम से मनाया गया। केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी के स्नेह-संरक्षण के अनेक संस्मरणों के साथ परिजनों को सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी।

आजादी के अमृत महोत्सव की मंगल वेला में युगतीर्थ में खिला केसरिया रंग

अनेक तिरंगा यात्राएँ निकाली गईं, राष्ट्रीय उत्कर्ष के लिए व्यक्तित्व विकास व सृजनात्मक सक्रियता का संदेश दिया

76वें स्वतंत्रता दिवस के दिन श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी की मुख्य उपस्थिति में शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय और गायत्री विद्यापीठ में छाया रहा आजादी के अमृत महोत्सव का उल्लास

76वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह

"हम स्वतंत्रता सेनानियों और सीमाओं की रक्षा कर रहे प्रहरियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रखते हैं। उसी के अनुरूप हमारा व्यक्तित्व, चरित्र और व्यवहार भी होना चाहिए, जिस पर हर भारतीय को गौरव-बोध हो सके। हम भी वीर शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों एवं सीमांत प्रहरियों की अपेक्षाओं पर खरे उतरें। - **श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी**

भारतीय स्वातंत्र्य की 75वीं वर्षगाँठ युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री विद्यापीठ में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। 11 अगस्त से ही आजादी के अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय अभियान में भागीदारी स्वरूप बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक हर वर्ग द्वारा अनेक तिरंगा यात्राएँ निकाली गईं। आजादी के इस अभूतपूर्व उत्सव में चाहे यहाँ के स्थायी कार्यकर्त्ता हों या शिविरार्थी साधक, सभी पर राष्ट्रभक्ति का रंग छाया रहा। 15 अगस्त के दिन ध्वजारोहण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी केसरिया रंग खूब खिला। इन कार्यक्रमों ने युग निर्माणी संकल्प और सक्रियता को बल दिया।

शान्तिकुञ्ज में देवात्मा हिमालय के प्रांगण में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह के मुख्य अतिथि श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी थे। उन्होंने ध्वजारोहण-ध्वजवंदन किया। तत्पश्चात् परेड़ की सलामी ली, जिसमें गायत्री विद्यापीठ के नौनिहालों से लेकर सुरक्षा गार्डों के अनेक दस्ते शामिल थे।

स्वतंत्रता दिवस समारोह अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सजाया गया था। यह संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया। गायत्री विद्यापीठ से लेकर कार्यकर्त्ता, शिविरार्थियों ने कई रंगारंग कार्यक्रमों के माध्यम से देश और संस्कृति के प्रति अपने सपर्मण एवं संकल्प की मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. साहब एवं कुल संरक्षिका श्रद्धेया जीजी ध्वजारोहण करने पहुँचे थे। पूरा विवि. परिसर तिरंगे के रंग में रंगा दिखाई दिया। कुलपति से लेकर सभी आचार्य एवं विद्यार्थियों ने हाथों में तिरंगा लेकर माँ भारती की जय-जयकार की, तिरंगा यात्रा निकाली।

गायत्री विद्यापीठ का उत्साह

गायत्री विद्यापीठ में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं शिक्षण समिति की अध्यक्ष श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने ध्वजारोहरण कर बच्चों को अच्छे नागरिक बनने की प्रेरणा दी, प.पू. गुरुदेव के सपनों को साकार करने के संकल्प दिलाए। जोश और उत्साह से लबरेज शिक्षक-विद्यार्थियों ने गायत्री विद्यापीठ से लेकर शान्तिकुञ्ज तक तिरंगा यात्रा निकाली।

तिरंगा जनजागरण यात्रा

"हमारी राष्ट्रीयता फैशन और आडम्बर बनकर न रह जाए। आज तो राष्ट्र से प्रेम बस इतना दिखाई देता है कि कोई बड़ा आयोजन हो तो हम भारत माता की जय-जयकार बोलें और फिर भ्रष्टाचार, अनीति, अत्याचार में जुट जाएँ। राष्ट्रीयता का उद्देश्य तो तब पूरा होता है जब हम राष्ट्र की अस्मिता, चरित्र और स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए समर्पित हो जाएँ। - **डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी**

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिकुञ्ज-वासियों ने विशाल तिरंगा जनजागरण यात्रा निकाली। शान्तिकुञ्ज स्थित 100 फीट ऊँचे राष्ट्रध्वज के तले आयोजित सभा के साथ इसका शुभारम्भ हुआ। देसंविवि के प्रतिकुलपति आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इसका नेतृत्व किया। यात्रा से पूर्व उन्होंने विश्व-नायक भारतवर्ष की गौरव-गरिमा पर प्रकाश डाला। श्री श्यामबिहारी दुबे एवं श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर के ओजस्वी संचालन ने यात्रा में क्रान्ति के स्वरों का संचार किया। शान्तिकुञ्ज से आरम्भ होकर समीपस्थ ग्राम हरिपुर कलाँ और देव संस्कृति विश्वविद्यालय में जनजागरण कर यात्रा लौटी।

वृक्ष काँवड़ तिरंगा वाहन यात्रा ने उकेरे राष्ट्रभक्ति के रंग

रक्षाबंधन पर पर्यावरण संरक्षण एवं आजादी के अमृत महोत्सव में राष्ट्रभक्ति का संदेश देने के लिए शान्तिकुञ्ज द्वारा देव नगरी हरिद्वार में 11 अगस्त को वाहन जनजागरण यात्रा का आयोजन किया गया। चार पहिया वाहनों पर सजी सात झाँकियों के साथ गले में तुलसी के पौधों की काँवड़, हाथों में राष्ट्रध्वज एवं मुख में युगनिर्माणी जय-जयकार सहित लगभग 400 दो पहिया वाहन सवार इसमें शामिल हुए। इसने ऋषिकेश-दिल्ली राजमार्ग, देवपुरा, रानीपुर मोड़, रेलवे स्टेशन, मोती बाजार, हरकी पौड़ी, भूपतवाला, खड़खड़ी, हरीपुरकलाँ में लोगों और तीर्थयात्रियों पर निराली छाप छोड़ी।

रक्षाबंधन श्रावणी | राखी के धागों में स्नेह, सम्मान और सद्भाव की अद्भुत शक्ति होती है। - **श्रद्धेया शैल जीजी**

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी को राखी बाँधती बहिनें

श्रावणी उपाकर्म कर रहे साधकगण

इस वर्ष शान्तिकुञ्ज में रक्षाबन्धन का पावन पर्व आजादी के अमृत महोत्सव के विशेष उल्लास के बीच मनाया गया। सभी साधक-शिष्यों ने ऋषियुग्म की चरण पादुकाओं पर अपनी स्नेहाञ्जलि समर्पित करते हुए उनके संरक्षण की दिव्य अनुभूति के साथ अपने कर्त्तव्यों का स्मरण किया।

श्रावणी उपाकर्म के समय युग पुरोहितों ने और सायंकालीन दीपयज्ञ के समय ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने राष्ट्र निर्माताओं के प्रति समर्पित सजल संवेदनाओं सहित राष्ट्र के नवनिर्माण के महायज्ञ में अपनी गरिमापूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करने के संकल्प दिलाए।

हर वर्ष की भाँति श्रद्धेया शैल जीजी ने शान्तिकुञ्ज में उपस्थित समस्त भाइयों को राखी बाँधी और समस्त बहिनों ने श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की कलाई को अपने स्नेह की डोर से सजाया।

श्रद्धेया जीजी ने रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में अपना संदेश दिया। उन्होंने कहा कि राखी के धागों में स्नेह, सम्मान और सद्भाव की अद्भुत शक्ति होती है। इसे अनुभव किया जा सके तो हर व्यक्ति में राष्ट्र के उत्थान के लिए स्वतंत्रता सेनानियों जैसी उमंग छा जाएगी।

श्रावणी के उपलक्ष्य में हुआ वृक्षारोपण

श्रद्धेय डॉ. साहब ने देश के सैनिकों की रक्षा के लिए आगे आने का आह्वान किया व नारी की अस्मिता की रक्षा और उसके गौरव का सम्मान करने के संकल्प दिलाए।

श्रावणी के उपलक्ष्य में शान्तिकुञ्ज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण किया गया।

मानवीय एकता के लिए विश्व को सद्ज्ञान, आध्यात्मिकता और आशावाद के सूत्रों में पिरोने की आवश्यकता है। - **सुश्री बोरेनेश पेट्रीसिया, राष्ट्रमंडल देशों की महासचिव**

देव संस्कृति विश्वविद्यालय शान्तिकुञ्ज में 12 अगस्त को शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती व्याख्यानमाला की कड़ी में एक विशेष कार्यक्रम हुआ। इसकी मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि राष्ट्रमण्डल देशों की महासचिव सुश्री बोरेनेश पेट्रीसिया स्कॉटलैण्ड थीं।

माननीया पेट्रीसिया जी ने अपने व्याख्यान में उपस्थित युवाओं को उनकी सामर्थ्य और सौभाग्य का बोध कराया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की ज्ञान सम्पदा को अर्जित करने का जो सुनहरा अवसर आपको यहाँ मिला है, उसे व्यर्थ न जाने दें। इन दिनों मानवीय एकता के लिए विश्व को सद्ज्ञान, आध्यात्मिकता और आशावाद के सूत्रों में पिरोने की आवश्यकता है। माननीया पेट्रीसिया ने कहा कि गायत्री परिवार के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण एवं मानवता के लिए जो कार्य हो रहे हैं, वह सभी राष्ट्र मण्डल देशों के लिए प्रेरणादायी हैं।

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती व्याख्यान माला

अपने स्वागत उद्बोधन में देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की मानवीय उत्कर्ष के लिए की गई संकल्पना और वैश्विक परिवर्तन की योजना से अतिथि महोदया को अवगत कराया तथा विश्वविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी दी। सभा के अंत में कुलपति श्री शरद पारधी ने आभार प्रकट किया।

सुश्री पेट्रीसिया ने देसंविवि में स्थापित एशिया के एकमात्र बाल्टिक सेंटर का अवलोकन किया। वे स्वावलंबन कार्यशाला एवं गौशाला का निरीक्षण करने भी पहुँचीं। प्रज्ञेश्वर महादेव की पूजा-अर्चना कर विश्वशांति की कामना की और मंदिर परिसर में पौधे रोपे।

मंच पर सुश्री पेट्रीसिया का सम्मान करते प्रतिकुपति एवं कुलपति महोदय

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.8.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

युवा चेतना जागरण शिविरों में कर्त्तव्य बोध एवं राष्ट्रभक्ति की प्रेरणाएँ

मध्य प्रदेश के 25 जिलों के कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन

उज्जैन। मध्य प्रदेश

भारतवर्ष का आध्यात्मिक आभा मंडल चारों ओर अपना सकारात्मक प्रभाव दिखा रहा है। भारत आर्थिक, सैन्य, तकनीकी, राजनीति, कूटनीति हर क्षेत्र में विश्व पर अपना प्रभाव ही नहीं डाल रहा, बल्कि शान्ति एवं स्थिरता के लिए मार्गदर्शन भी कर रहा है। भारत के अभ्युदय की वर्तमान वेला में देश के युवाओं एवं महिलाओं को राष्ट्र के सजग प्रहरी के रूप में अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करना होगा।

युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के प्रभारी श्री केदार प्रसाद दुबे ने गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर युवा प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए इन शब्दों के साथ शिविर की भूमिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर उपस्थित श्री विभाष उपाध्याय, उपाध्यक्ष जन अभियान परिषद ने दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि गायत्री महाशक्ति ही युग परिवर्तन का आधार बनेगी। परम पूज्य गुरुदेव की अवधारणा के अनुरूप विचारों के परिवर्तन से ही दुनिया बदलेगी।

भारत के अभ्युदय की वर्तमान वेला में देश के युवाओं एवं महिलाओं को राष्ट्र के सजग प्रहरी के रूप में अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करना होगा।
- श्री के.पी. दुबे, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

मध्य जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि एवं युवा प्रकोष्ठ प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह ने भी शिविर को सम्बोधित किया। प्रमुख वक्ता श्री केदार प्रसाद दुबे जी ने कई उत्साहवर्धक सूत्रों की चर्चा की। उन्होंने कहा वर्तमान में जिएँ और उसका सदुपयोग करें। प्रवाह पतित ना हो, धारा चीर कर आगे बढ़ने का साहस बनाए रखें। साधना से हर समर में विजय मिलेगी।

25 जिलों के प्रतिनिधि इस प्रशिक्षण में शामिल रहे। 3 दिनों के विचार विमर्श और मार्गदर्शन के आधार पर उन्होंने अपने क्षेत्र, अर्थात् लगभग आधे मध्य प्रदेश में अगले लगभग एक वर्ष की सक्रियता के उत्साहवर्धक संकल्प लिए।

उज्जैन के उपजोन समन्वयक श्री राजेश पटेल ने विदाई उद्बोधन दिया। श्री विवेक चौधरी, प्रांतीय समन्वयक युवा प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश ने युगाधिपति भगवान महाकाल के जयकारों के साथ भावी सक्रियता के संकल्प दिलाए।

भावी संकल्प

- 135 युवा चेतना शिविर
- 351 स्वावलंबन प्रशिक्षण शिविर
- 951 ग्राम में तीर्थ परिव्रज्या
- 205 युवा मंडलों के गठन
- 3,700 नये साधक तैयार करना
- 13,000 घरों में गंगाजल देव स्थापना
- 8,000 वृक्ष की पौध मोक्षधामों में लगाना
- 367 माता भगवती की बाड़ी बनाना
- 166 नई बाल संस्कारशालाएँ
- 180 जल स्रोतों के संरक्षण का काम

आदि सामूहिक संकल्प लिए गए।

मध्य प्रदेश के युवाओं को सम्बोधित करते श्री योगेन्द्र गिरि वृक्षभेंट कर गणमान्यों का स्वागत

महाराष्ट्र : जिला स्तरीय युवा सम्मेलन

चंद्रपुर। महाराष्ट्र

31 जुलाई को चंद्रपुर में जिला स्तरीय युवा कार्यशाला सम्पन्न हुई। युवा शिविर में जीवन जीने की कला, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, स्वास्थ्य प्रबंधन, बाल संस्कारशाला संचालन, विचार क्रान्ति एवं व्यसन मुक्ति आन्दोलन आदि विषयों पर विशेषज्ञों ने विस्तार से चर्चा की, क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप योजना बनाकर समग्र अभियान को गति देने के लिए मार्गदर्शन दिया। श्री विनोद मदनकर, डॉ. अपर्णा शुक्ला, सौ. नीलम विश्वकर्मा, डॉ. गाडेवार, सौ. वर्षा, भारती मिश्रा, श्री वासुदेव राठौर, श्री रत्नाकर हजारे ने इन विषयों को प्रतिपादित किया।

- जिले के कुल 95 भाई-बहिनों ने भाग लिया।
- स्थानीय गणमान्यों ने नीम के 25 पौधों का पूजन किया।
- 'तुलसी के चमत्कारिक गुण' 400 पुस्तिकाएँ वितरित की गईं।

कार्यक्रम के अन्तिम चरण में भजन, संकीर्तन एवं दीपयज्ञ हुआ। इस अवसर पर विविध आन्दोलनों को गति देने के संकल्प उभरे। श्री विनोद मदनकर को युवा जिला समन्वयक की एवं एडवोकेट कु. कल्याणी राजेंद्र लड़के को जिला स्तर पर बहिनों के समन्वय की जिम्मेदारी सौंपी गई।

चन्द्रपुर के शिविर में उत्कृष्ट सक्रियता के लिए प्रमाणपत्र वितरण एवं सम्मान

जिला सम्मेलन में सृजनशील युवाओं की खेप राष्ट्र को देने के संकल्प

रायबरेली। उत्तर प्रदेश

दिनांक 24 जुलाई को रायबरेली के फिरोज गाँधी डिग्री कालेज सभागार में जिला स्तरीय युवा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसके माध्यम से पूरे जिले के युवाओं को मानवीय उत्कर्ष की दिशाधारा की ओर प्रेरित करने में शानदार सफलता मिली। कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत करते हुए श्री सन्दीप त्रिपाठी ने रायबरेली के गौरव की याद दिलाई। उन्होंने कहा कि यह कलम और तलवार की धरती है, जहाँ एक ओर राणा बेनी माधव सिंह की तलवार राष्ट्र निर्माण के लिए संघर्ष की प्रेरणा देती हैं, वहीं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का साहित्य समाज निर्माण के लिए हमें प्रेरित करता है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह ने युवाओं को दायित्व बोध कराया। जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री नरेन्द्र ठाकुर ने कहा कि सविता सृष्टि की ऊर्जा का मूल स्रोत है। उसकी उपासना जीवन को कल्याणकारी पथ पर अग्रसर करती है। अतः युवाओं को गायत्री उपासना की प्रेरणा देना मानवता की बहुत बड़ी सेवा है।

सविता सृष्टि की ऊर्जा का मूल स्रोत है। उसकी उपासना जीवन को कल्याणकारी पथ पर अग्रसर करती है।
- श्री नरेन्द्र, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

मुख्य वक्ता श्री आशीष सिंह, श्री संदीप त्रिपाठी एवं मंत्री श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह

मुख्य अतिथि श्री दिनेश प्रताप सिंह, राज्य मन्त्री उ.प्र सरकार एवं विधायक श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह थे। माननीय मंत्री जी ने गायत्री परिवार की सेवाओं की सराहना की। माननीय श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह जी ने यज्ञ एवं संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन को समय की माँग बताया। उन्होंने गायत्री परिवार की गतिविधियों में सहयोग करते हुए उदारतापूर्वक अनुदान भी दिया।

जिला समन्वयक श्री वी.बी. सिंह ने बताया कि गायत्री परिवार रायबरेली मिशन को एक ऐसी युवा पीढ़ी देने के लिए कृत संकल्पित है, जो युग निर्माण आन्दोलन के लिए पूरी तरह से समर्पित होगी।

रायबरेली के विशाल सभागार में सम्मानित मंच और युग निर्माणी उमंगों से सराबोर जिले के युवा कार्यकर्त्ता भाई-बहिन

पेंड्रा-गौरेला, मुंगेली, जांजगीर, कोरिया एवं बिलासपुर जिलों में दीया, छत्तीसगढ़ का विस्तार

बिलासपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ विनोबा नगर बिलासपुर में दिनांक 1 अगस्त 2022 को 'दिया' के विस्तार से सम्बन्धित गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें जिला पेंड्रा-गौरेला, मुंगेली, जांजगीर, कोरिया एवं बिलासपुर से आए युवा कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। उपरोक्त सभी जिलों में प्रभारी नियुक्त किए गए एवं कार्यकर्त्ताओं को जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं।

इस प्रांत स्तरीय कार्यक्रम में गायत्री परिवार छत्तीसगढ़ की जोन प्रभारी श्रीमती आदर्श वर्मा, दिया संयोजक छत्तीसगढ़ डॉ. पी.एल. साव सहित प्रमुख कार्यकर्त्ता मंचासीन थे। प्रांतीय संयोजक दिया छत्तीसगढ़ ने युवाओं को राष्ट्र निर्माण में योगदान के लिए आह्वान किया एवं मिशन के रचनात्मक आंदोलन को स्कूल-कॉलेज एवं गाँव-गाँव, शहर-शहर पहुँचाने का संदेश दिया।

ओजस्वी युवा श्री वेदप्रकाश थवाईत सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

युग निर्माणी आस्थाओं का पोषण

पुणे। महाराष्ट्र

31 जुलाई को पुणे में एक दिवसीय युवा चेतना जागरण शिविर सम्पन्न हुआ। विभिन्न रचनात्मक आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभा रहे लगभग 150 युवाओं ने इसमें भाग लिया। अनेक विषयों पर विचार मंथन हुआ, जिसमें युग निर्माणी आस्थाओं के पोषण के प्रभावशाली प्रयास किए गए। सभी ने अपनी कर्मठता और सक्रियता बढ़ाने और इसके लिए आवश्यक नियमित अंशदान-समयदान का संकल्प लिया।

पुणे के सम्मेलन में उपस्थित युवा युग सृजेता

छत्तीसगढ़ का विशेष साधना अभियान

ऋषियों की तपोभूमि पर किए जा रहे हैं अनुष्ठान

नगरी, धमतरी। छत्तीसगढ़

इन दिनों छत्तीसगढ़ में गायत्री परिवार द्वारा प्राचीन आध्यात्मिक केन्द्रों की सूक्ष्म चेतना के पुनर्जीवन हेतु विशेष साधना अभियान चलाया जा रहा है। इस क्रम में गायत्री परिवार नगरी ब्लॉक के समस्त परिजनों द्वारा सरभंग ऋषि आश्रम दलदली में सवा लाख गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान रखा गया था। कुल 125 साधकों ने इसमें भाग लेते हुए लक्ष्य से कहीं अधिक संख्या में गायत्री महामंत्र मंत्र का जप किया।

शरभंग ऋषि आश्रम नगरी से 10 किलोमीटर की दूरी पर एक दुर्गम पहाड़ पर स्थित है। गायत्री परिवार ने तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए पूरी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ अपना संकल्प पूरा किया। जप की पूर्णाहुति यज्ञ से हुई।

साधना अभियान का यह छठवां स्थान था, जिसकी व्यवस्था गट्टासिल्ली मंडल ने सँभाली। दलदली ग्राम वासियों ने भी भोजन बनाने एवं व्यवस्था में विशेष योगदान दिया।

साधना अभियान का अगला कार्यक्रम अंगिरा ऋषि आश्रम, रतावा में 7 अगस्त को निर्धारित था। सांकरा मण्डल को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

विषपायी सदाशिव 'वृक्ष देवता' की पूजा-प्रार्थना एवं प्रतिष्ठा

बरगी बाँध में रोपी 1008 वृक्षों की पौध, कहा-वृक्ष सर्वोत्तम स्मारक हैं

जबलपुर। मध्य प्रदेश

जबलपुर शाखा के प्राणवान परिजनों ने बरगी बाँध में वृहद् वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित करते हुए 1008 वृक्षों की पौध रोपी। श्री मनोज सेन के अनुसार नगर में यह कार्यक्रम एक प्राणवान उत्सव की तरह सम्पन्न हुआ। वाहन रैली के रूप में सभी परिजन पूरे नगर में पर्यावरण जागरूकता एवं वृक्षारोपण का संदेश देते हुए बरगी बांध पहुँचे। गायत्री परिवार के अलावा बड़ी संख्या में अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने भी इस पुनीत अभियान में भाग लिया।

गायत्री परिवार के परिजनों ने परम पूज्य गुरुदेव का संदेश दोहराते हुए वृक्षों को स्वजनों का सबसे अच्छा स्मारक बताया। नगरवासियों को बताया गया कि वृक्ष स्वच्छ हवा, प्राणवायु, स्वास्थ्य का खजाना हैं। वृक्षों से हराभरा संसार मन को प्रफुल्लित रखता है। वृक्ष हैं तो जीवन है, वृक्ष नहीं तो जीवन में नीरसता और अनेक संकट खड़े हो जाएँगे।

बरगी बाँध पर वृक्षारोपण की झलक

आओ मिलकर तरु मित्र बनाएँ, एक पौधा लगाकर हर दिन मित्रता दिवस मनाएँ

बिलासपुर। मध्य प्रदेश

'मित्रता दिवस' दिनांक 7 अगस्त को डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन (दिया) बिलासपुर द्वारा वृक्षों के मित्र बनकर पौधों का रोपण एवं पोषण करने की प्रेरणा के साथ बृहद वृक्षारोपण किया गया। दिया, बिलासपुर के कार्यकर्ताओं ने उस दिन ई-अपार्टमेंट, गीतांजलि सिटी, फेस 2 बहतराई रोड, बिलासपुर में क्लीन बिलासपुर-ग्रीन बिलासपुर के भाव के साथ वृक्षारोपण किया। सर्वश्री सौरभ पाटनवार, वेद प्रकाश थवाईत, आकांक्षा वर्मा, डॉ. प्रियंका नेताम, देवेंद्र कांत साहू, ऋषि पटेल, अविनाश साहू, विनोद साहू आदि की सक्रियता ने सभी को उत्साहित किया।

लक्ष्य हर वर्ष 5000 वृक्षारोपण

श्री शीलनाथ धूनी परिसर में
देवास। मध्य प्रदेश

देवास ने माता चामुंडा की पावन टेकरी पर स्थित श्री शीलनाथ धूनी परिसर में पौधारोपण किया। यह कार्यक्रम आश्रम संचालक संत श्री माधवानंद गिरी महाराज के सान्निध्य एवं टेकरी प्रभारी श्री महेश चन्द्रवंशी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार की ओर से इसमें सर्वश्री देवीशंकर तिवारी, महेश आचार्य, शेषनारायण परमार, देवकरण कुमावत, सुभाष जैन, हजारीलाल चौहान, लक्ष्मण पटेल, बाबूलाल सोलंकी, प्रमोद निहाले प्रमुख रूप से भागीदार रहे।

संत श्री माधवानंद गिरी ने इस अवसर पर वृक्षों को मानवीय जीवन का आधार और वृक्षारोपण को सर्वोत्तम परोपकार बताया। उन्होंने लोगों को अपने मांगलिक प्रसंग या पूर्वजों की स्मृति में कम से कम 11 पौधे अनिवार्य रूप से लगाने की प्रेरणा दी।

अवंतिका नगर में

हरियाली अमावस के दिन गायत्री परिवार देवास द्वारा अवंतिका नगर में गार्डन के शिव मंदिर प्रांगण में फलदार और छायादार पौधे रोपे गए। गायत्री परिवार के प्रेरणाप्रद उद्घोष 'सर्वश्रेष्ठ दान पौधारोपण अभियान' को अपनाते हुए स्थानीय निवासियों ने भी इस अभियान में बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ भाग लिया। सर्वश्री प्रमोद निहाले, देवकरण कुमावत, हजारीलाल चौहान, प्रहलाद सोलंकी, शालिग्राम सकलेचा, सुरेंद्र दुबे, लक्ष्मण पटेल रमेश नागर, मेहरबान सोलंकी आदि इस अभियान में प्रमुख रूप से शामिल रहे।

देवास शाखा के मीडिया प्रभारी श्री विक्रम सिंह चौधरी ने बताया कि उनके द्वारा हर वर्ष लगभग 5000 वृक्षों की पौध रोपी जाती है। लोगों को अपने जन्मदिन-विवाहदिन जैसे शुभ अवसरों पर जीवनदायी वृक्ष लगाने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाता है। शक्तिपीठ द्वारा इसके लिए पौधे भी उपलब्ध कराए जाते हैं।

माता चामुंडा की टेकरी पर और दायें अवंतिका नगर में वृक्षारोपण करते परिजन

साप्ताहिक वृक्षारोपण: बाल सुधार गृह में रोपी 24 वृक्षों की पौध

जहानाबाद, बिहार : प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद ने अपने अथक, अनवरत साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत 59वें रविवार को बाल सुधार गृह के परिसर में वृक्षारोपण किया। उस दिन पूजन और मंत्रोच्चारण के साथ चौबीस अमरूद के पौधे रोपे गए। इस अवसर पर पर्यवेक्षण गृह के अधीक्षक अमरेंद्र कुमार सिंह ने वृक्षारोपण को जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से विकराल होते जा रहे संकट से बचाव के लिए अत्यावश्यक बताया।

अगले साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम में मोदनगंज प्रखंड के गंधार गाँव में स्थित शिशिर इंजीकॉन प्रा. लिमिटेड के उद्घाटन समारोह के अवसर पर 24 वृक्षों का रोपण किया गया। इस अवसर पर बिहार सरकार के श्रम संसाधन मंत्री जिवेश कुमार, जिला परिषद अध्यक्षा रानी कुमारी, मनोज शर्मा पूर्व विधायक गोह तथा शिशिर इंजीकॉन प्रा.लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर अर्चना कुमारी एवं राकेश कुमार सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे। सबने गायत्री परिवार के वृक्षारोपण अभियान को प्रकृति की सुरक्षा के लिए अनमोल एवं अनुपम प्रयास बताया।

61वें रविवार के दिन मखदुमपुर प्रखंड के गाँव भीमपुरा में तरुपुत्र रोपण यज्ञ के विधि-विधान के साथ चौबीस फलदार पेड़ों की पौध रोपी गई। कलसी बिल्डकॉन के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री बालमुकुंद शर्मा ने कार्यक्रम में उपस्थित रहकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन किया और कार्यकर्त्ताओं को वृक्षारोपण की प्रेरणा दी।

शिशिर इंजीकॉन प्रा. लिमिटेड के उद्घाटन समारोह के अवसर पर विधायक आदि गणमान्यों द्वारा किया जा रहा वृक्षारोपण

ग्राम भीमापुरा में वृक्षारोपण करते गायत्री परिवार के युवा कार्यकर्त्ता

हरियाली अमावस पर रोपे 108 पौधे

सिंघाना, धार। मध्य प्रदेश

हरियाली अमावस के दिन गायत्री परिवार सिंघाना ने खुमानपुरा हनुमान जी मंदिर परिसर में तरुपुत्र के रूप में 108 पेड़ों की पौध लगाई। यह कार्यक्रम पर्यावरण के प्रति लोगों की बढ़ती जागरूकता एवं श्रद्धा-सक्रियता का जीवन्त प्रतीक था। शाखा ने पर्यावरण जागरूकता कि लिए गुप्त नवरात्रि (30 जून से 8 जुलाई तक) सवा लक्ष गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान रखा था। इसी की पूर्णाहुति स्वरूप 108 पौधों के रोपण का संकल्प भी लिया गया था। संकल्प से तीन गुना अधिक जप हुआ। पौधारोपण के कार्यक्रम में अनेक पर्यावरण प्रेमी भाई-बहिनों ने भागीदारी की। शक्तिपीठ व्यवस्थापक सहदेव पाटीदार, परिव्राजक महेश राठौड़, राकेश राठौर, राजेन्द्र पंवार, प्रज्ञा, श्रद्धा, विश्वास, मधुर, सुमन पाटीदार, सुनीता आदि ने लगाए गए सभी पौधों के संरक्षण की जिम्मेदारी ली है।

पहाड़ी पर रोपे 101 पौधे

जतारा। मध्य प्रदेश

हरियाली तीज के पावन अवसर पर गायत्री परिवार के युवाओं ने वन समिति के साथ मिलकर जतारा वन्य क्षेत्र के अन्तर्गत वीट स्थित जंगली पहाड़ी पर वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया। युवा प्रकोष्ठ के श्री मदन समेले के अनुसार इस अवसर पर पहाड़ी को हरियाली की चूनर पहनाने के भाव के साथ सागौन, कथा, बेल, शीशम आदि के 101 पौधे लगाए गए। वन विभाग के श्री जे.पी. प्रजापति ने पौधों की सुरक्षा एवं देखभाल करने का आश्वासन दिया।

निःशुल्क उपलब्ध कराए जा रहे हैं पौधे

लोरमी, बिलासपुर। छत्तीसगढ़

3 अगस्त को युवा संगठन 'दिया' लोरमी से जुड़े कार्यकर्त्ताओं ने ग्राम औराबांधा में वृक्षारोपण अभियान चलाया। इस अवसर पर श्री गायत्री प्रसाद साहू एवं श्री गंगाराम साहू के मार्गदर्शन में आम, आँवला, अमरूद, अशोक, नीम आदि के पौधे रोपे गए। रघुनन्दन साहू, श्रीधर साहू, पद्मा राजपूत, मोहनलाल, दीपा, नंदिनी, वृंदा आदि ने मिलकर वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर 500 पौधों का वितरण भी किया गया।

लोरमी में वृक्षारोपण कर रहे परिजन

चितौड़गढ़। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ पर दिनांक 17 जुलाई को संपूर्ण चितौड़गढ़ जिले के परिजनों की बैठक हुई। इसमें गुरुपूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक वृक्षारोपण मास आयोजित कर वृक्षारोपण को गति देने पर विचार-विमर्श हुआ। शक्तिपीठ द्वारा पौधारोपण करने वालों को पौधे निःशुल्क उपलब्ध कराने की घोषणा की गई।

श्री रमेश चंद्र पुरोहित ने बताया कि उसी दिन ग्राम बिलोदा में श्री रमेश जी खंडेलवाल एवं श्री मदन लाल शर्मा के मार्गदर्शन में नवयुवकों ने माताजी के मंदिर में पौधारोपण किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री सत्यनारायण शर्मा, डॉ. योगेश व्यास, डॉ. गोविंद राम शर्मा उपस्थित रहे।

गाँव में लगाए 360 फलदार पेड़

छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार तामिया के परिजनों द्वारा श्री माखनलाल भारती के सहयोग से पतालकोट के गुडीछतरी ग्राम में वृक्षारोपण का बृहद कार्यक्रम आयोजित किया गया। ग्रामवासियों ने इसमें बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। पूरे अभियान में वृक्षों के पूजन के बाद नीबू के 340 वृक्ष एवं आम के 20 पौधे लगाए गए। गाँववासियों को धरती माँ को हराभरा करने की प्रेरणा दी गई।

विद्यालयों में पर्यावरण जागरूकता अभियान

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सुलतानपुर जनपद के विद्यालयों में पर्यावरण जागरूकता अभियान चल पड़ा है। बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. सुधाकर सिंह के नेतृत्व में एक टीम प्रतिदिन जनपद के विभिन्न विद्यालयों में जाकर बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक कर रही है।

अभियान के अनतर्गत 11 अगस्त को टीम विश्वनाथ इंटर कॉलेज कलान पहुँची। डॉ. सुधाकर सिंह ने पर्यावरण जागरूकता सम्बन्धी बातें बताईं। श्री जितेंद्र श्रीवास्तव ने बच्चों को आजादी के अमृत महोत्सव में प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया। श्री प्रभाकर सक्सेना ने उन्हें पौधरोपण का संकल्प दिलाया। उल्लेखनीय है कि इस कार्य के आधार पर बच्चों को पर्यावरण विषय में दिए जाने वाले अंक निर्धारित होंगे। प्रधानाचार्य श्री आशुतोष सिंह ने आये हुए सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया।

तुलसी जयन्ती पर तुलसी रोपण 8अभियान को गति दी

मुम्बई। महाराष्ट्र

पर्यावरण के संरक्षण में तुलसी के महत्व को ध्यान में रखते हुए दिया, मुम्बई द्वारा सन् 2014 से ही घर-घर तुलसी स्थापना का विशेष अभियान चलाया जा रहा है। उनके द्वारा समय-समय पर तुलसी विवाह, तुलसी उत्सव के कार्यक्रम होते हैं, तुलसी वृंदावन, तुलसी वाटिका, तुलसी वन जैसी स्थापनाएँ की जाती हैं और सभी को जन्मदिन, विवाह की वर्षगाँठ पर तुलसी की पौध उपहार में देने की परम्परा चलाई गई है।

तुलसीदास जयन्ती से एक दिन पूर्व दिया, मुम्बई और गुरु नानक इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज की टीम ने विभिन्न स्थानों पर सैकड़ों तुलसी के पौधे रोपे एवं पुस्तक 'तुलसी के चमत्कारी गुण' वितरित किये।

तुलसी रोपण के ये कार्यक्रम मुंबई जिला एड्स नियंत्रण सोसायटी, दादर फायर स्टेशन, माटुंगा पुलिस स्टेशन, विक्टोरिया जुबली टेक्निकल इंस्टीट्यूट, आईसीटी कॉलेज, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक की शाखाएँ, बालाजी मंदिर एवं माटुंगा डाकघर में पूरे आध्यात्मिक विधि-विधान के साथ आयोजित किए गए थे। शुचिता शेट्टी ने सभी प्रतिभागियों को गायत्री उपासना के साथ तुलसी के आध्यात्मिक लाभ लेने के लिए प्रेरित किया।

असंतुष्ट मनुष्य संसार में अधिक दिन तक जीवित नहीं रहते।

युगशक्ति गायत्री के दिव्य आलोक को जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है

ज्ञानगंगा कांवड़ यात्रा ने खूब प्रभावित किया

ब्यावरा, राजगढ़। मध्य प्रदेश

दिनांक 31 जुलाई, श्रावण मास के पावन अवसर पर ज्ञानगंगा जन जागरण काँवड़ यात्रा निकाली गई। इस वाहन यात्रा में 50 से अधिक वाहनों के साथ सैकड़ों की संख्या में गायत्री परिजनों ने भाग लिया। उन्होंने पीले कपड़े से बनी काँवडों में साहित्य रखकर उसे कंधे पर लेकर युगऋषि का संदेश जन-जन तक पहुँचाया। ओजस्वी नारों के साथ संदेश देते हुए बड़ी मात्रा में लोगों में साहित्य भी वितरित किया गया। यह यात्रा नगर के कई प्रमुख मार्गों से होते हुए गायत्री शक्तिपीठ पहुँची, जहाँ शांतिपाठ के साथ समापन हुआ।

ब्यावरा शाखा द्वारा निकाली गई ज्ञानगंगा काँवड़ यात्रा

मलयालम भाषा में 'गायत्री दर्शन' का विमोचन

कालीकट। केरल

30 जुलाई 2022 कालीकट श्री खंडेश्वर महादेव मंदिर के चैतन्य सभागार में श्री एम.टी. विश्वनाथन द्वारा लिखित पुस्तक 'गायत्री दर्शन' और डॉ. दीपेश जी की पुस्तक 'माधव केरला सुधा' का विमोचन हुआ। उल्लेखनीय है कि श्री एम.टी. विश्वनाथन जी सन् 2015 से गायत्री परिवार की मासिक पत्रिका 'अखण्ड ज्योति (मलयालम)' के सम्पादक हैं। वे पिछले 30 वर्षों से गायत्री संध्या प्रशिक्षण का साप्ताहिक क्रम चलाते हैं। वे अब तक लगभग 5000 लोगों को संध्या वंदन, पूजा कर्मकांड सीखा चुके हैं। गायत्री उपासकों के लाभार्थ अभिनव प्रयासों के अन्तर्गत उन्होंने गायत्री दर्शन नामक पुस्तक लिखी है।

समारोह में उपस्थित श्रद्धालुओं को मलयालम साहित्यकार श्री पी.आर. नाथन एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा ने गायत्री मंत्र पर उद्बोधन दिया।

'गायत्री दर्शन' का विमोचन करते साहित्यकार श्री पी.आर. नाथन, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा

शिव प्रताप संस्कृत महाविद्यालय में वाङ्मय स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत शिव प्रताप संस्कृत महाविद्यालय, चारबाग स्टेशन रोड़ छितावापुर लखनऊ में परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित वाङ्मय के सभी 79 खण्डों की स्थापना हुई। यह साहित्य सक्रिय कार्यकर्ता श्री हंस जी ने अपने पूर्वजों की स्मृति में भेंट किया। इस अवसर पर वाङ्मस स्थापना अभियान के संयोजक श्री उमानंद शर्मा, डॉ. नरेन्द्र देव, श्रीमती ऊषा सिंह तथा प्राचार्य डॉ. विनोद मिश्रा ने युग साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला।

महाविद्यालय में वाङ्मय स्थापना समारोह

प्राध्यापिका द्वारा साहित्य वितरण का प्रशंसनीय पुरुषार्थ

कारंजा, वाशिम। महाराष्ट्र

मुंगसाजी महाराज महाविद्यालय, दारव्हा में ग्रेजुएशन के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों का बिदाई समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर प्राध्यापिका धनश्री कोठेकर ने सभी विद्यार्थियों को परम पूज्य गुरुदेव के प्राणवान विचारों का सान्निध्य प्रदान करने के लिए उपहार के तौर पर अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका, 'हरिये न हिम्मत' पुस्तिका और सुविचारों के स्टिकर्स के सैट प्रदान किए। इस कार्यक्रम में स्नातक पाठ्यक्रम के तीनों वर्ष के विद्यार्थी, महाविद्यालय के प्राचार्य और सभी प्राध्यापकगण उपस्थित थे। सभी ने उपहार की इस निराली परम्परा की प्रशंसा की।

कारंजा (लाड) की निवासी कु. धनश्री दत्तात्रय कोठेकर बचपन से गायत्री उपासक एवं मिशन की सक्रिय सदस्या हैं। उनका कहना है कि गायत्री महामंत्र जप-लेखन तथा प. पू. गुरुदेव के अद्वितीय विचार के प्रभाव से ही वे आज एक यशस्वी प्राध्यापिका बनी हैं। वह अपने विद्यार्थियों को भी यह अमूल्य खजाना बाँटना चाहती हैं, ताकि अधिक से अधिक युवाओं को युगऋषि के विचारों का सान्निध्य एवं सन्मार्ग की प्रेरणा मिलती रहे। इस समारोह में उन्होंने 93 विद्यार्थियों को सत्साहित्य के पैकेट प्रदान किए।

जिले के प्रत्येक गाँव में बाल संस्कारशाला आरम्भ करने का है लक्ष्य

मुलताई, बैतूल। मध्य प्रदेश

ग्राम पिसाटा स्थित प्रज्ञापीठ में नई बाल संस्कारशाला का शुभारंभ हुआ। श्री मानीक राव लोखंडे ने ग्रामवासियों को संस्कार शाला का उद्देश्य बताते हुए कहा कि संस्कारवान बच्चे ही माता-पिता का सबसे बड़ा धन हैं। गायत्री परिवार बच्चों में अपनी संस्कृति में निहित जीवन मूल्यों का समावेश करते हुए उनके व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाने के लिए प्रयत्नशील है। उन्होंने प्रत्येक रविवार को अपनाई जाने वाली गतिविधियों की जानकारी ग्रामवासियों को दी। युवा प्रकोष्ठ के श्री रामकिशोर बनखेडे, डॉ. दीपचंद बनखेडे एवं विकासखंड समन्वयक श्री गणपति गायकवाड़ इस अवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

कई गाँवों में हुआ शुभारम्भ, कहा-संस्कारवान बच्चे ही माता पिता का सर्वोत्तम धन

इसी प्रकार की एक बाल संस्कारशाला ग्राम एनखेड़ा में आरम्भ की गई है, जिसका संचालन श्री सुभाष देशमुख कर रहे हैं।

गुरुपूर्णिमा के उपरान्त ग्राम साईंखेड़ा, पोहर एवं देहगुड़ में भी बाल संस्कार शालाओं का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर उपस्थित बच्चों से श्रीअविनाश खंडागरे ने कहा कि हम जीवन में जो कुछ भी बनें, लेकिन सबसे पहले अच्छे इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए।

बाल संस्कार शालाओं के शुभारम्भ के इस पुनीत अवसर पर ग्रामवासी किसानों को फलदार वृक्षों की पौध बाँटी गई तथा उनके संरक्षण का संकल्प दिलाया गया।

बैतूल उपजोन प्रभारी श्री दीपचंद मालवीय तथा कई अग्रणी कार्यकर्त्ता डॉ. कैलाश वर्मा, श्री टी.के. चौधरी, श्री अजय पंवार आदि की गरिमामय उपस्थिति में ग्राम ऊमनपेठ में बाल संस्कार शाला का शुभारम्भ हुआ।

राजिम में बाल संस्कारशाला आरम्भ हुई

राजिम, गरियाबन्द। छत्तीसगढ़

दिनांक 25 जून को राजिम में कन्या कौशल शिविर आयोजित हुआ। इस अवसर पर ग्राम रावड़ में बाल संस्कारशाला का शुभारंभ किया गया, जिसमें सुश्री लक्ष्मी सेन, सुश्री जया साहू, खिताब, सहज, कल्पना साहू, कविता निषाद, डिंपल मन्नाडे का आचार्यवरण करवाया गया। शिविर में लगभग 40 बच्चों ने भाग लिया। ब्लॉक समन्वयक श्री टीकमचंद सेन, नारी सशक्तीकरण अभियान की जिला प्रभारी श्रीमती दुर्गावती सेन मुख्य रूप से उपस्थिति रहे।

विद्यारम्भ संस्कार : उसी दिन माँ भगवती महिला मंडल द्वारा राजिम महानगर के महामाया पारा प्राथमिक कन्याशाला

राजिम में दीप महायज्ञ के साथ 53 बच्चों का विद्यारम्भ संस्कार किया गया।

जनचेतना जगाने के लिए कर्मठता का अभिनन्दन

लगभग प्रतिदिन चलता है गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान

144 घरों में यज्ञ, 100 घरों में देवस्थापनाएँ

कोटा। राजस्थान

युग परिवर्तन के महायज्ञ में अपनी नैष्ठिक सक्रियता का शानदार परिचय देते हुए नवचेतना विस्तार केन्द्र, थर्मल कॉलोनी, सकतपुरा, कुन्हाडी ने अपने पूरे क्षेत्र को जीवन्त और जाग्रत् बनाए रखा है। इस केन्द्र द्वारा पिछले कई वर्षों से प्रायः प्रतिदिन किसी न किसी घर में यज्ञ, संस्कार, देवस्थापना, जप साधना जैसे कार्यक्रम का आयोज होता रही रहा है। इसके माध्यम से घर-घर स्वाध्याय एवं संस्कारों की पुण्य परम्परा का शानदार विस्तार हो रहा है।

दिनांक 1 जनवरी से 30 जून तक के प्राप्त विवरण के अनुसार केन्द्र द्वारा कुल 144 घरों में यज्ञ कराए गए, जिनमें लगभग 100 घरों में देवस्थापनाएँ हुईं। इन यज्ञों के साथ संस्कार, गृह प्रवेश जैसे कोई न कोई कार्यक्रम जुड़े रहे। पाँच स्थानों पर पाँच कुण्डीय सार्वजनिक यज्ञों के आयोजन भी हुए। पूरे अभियान से सैकड़ों लोगों को गायत्री उपासना करने और जीवन की बुराइयों को छोड़कर श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणाएँ दी जा सकी हैं।

इन्दौर। मध्य प्रदेश : 14 जुलाई 2022 को गायत्री शक्तिपीठ केशरबाग में पहला विशाल यज्ञीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। नौ कुण्डीय यज्ञ का यह कार्यक्रम विशेष रूप से वरुण देव की प्रसन्नता के लिए आयोजित किया गया था, जिसमें विशेष आहुतियाँ समर्पित करते हुए अच्छी वर्षा की प्रार्थना की गई। श्रीमती रचना कटरे एवं श्रीमती पूनम त्रिपाठी ने यज्ञ संचालन किया।

वरिष्ठ जन सम्मान समारोह

शक्तिपीठ पर वरिष्ठ-वयोवृद्ध कार्यकर्त्ताओं के लिए गौरवान्वित करने वाले पल

इन्दौर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ, केशर बाग, इन्दौर द्वारा शक्तिपीठ पर एक समारोह आयोजित कर विगत 30-40 वर्षों से मिशन की निःस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया गया। श्री आर.के. गुप्ता, श्री नारायण प्रसाद शर्मा, श्री महाकाल श्रीवास्तव ने ऐसे लगभग 75 कार्यकर्त्ताओं का शॉल, श्रीफल एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी व श्रद्धेया शैल जीजी के हस्ताक्षरों से युक्त प्रशस्ति पत्र प्रदान कर स्वागत-अभिनन्दन किया। पुरस्कार प्राप्त करने वाले कार्यकर्त्ताओं में श्री प्रकाश पंवार, श्रीमती नारायणी टावरी, 100 वर्षीय श्री किशोर सिंह दशौंधी, तुलसीदास प्रजापति, पं. राधेश्याम आचार्य, श्रीमती निर्मला चौहान, सर्वश्री बालकृष्ण सोहनी, मनोहरलाल शर्मा, कुसुम शर्मा, तेजराम चौधरी, मनोरमा चौधरी, रतनसिंह आजाद, सरस्वती आचार्य, पन्नालाल छापोला, माया सिजारिया, रमेशचन्द्र शास्त्री, नारायण चावड़ा, शंकरलाल शर्मा, किशोरीलाल सोनगरा, कैलाशचंद्र उपाध्याय, महेन्द्र शर्मा, जगदीश व्यास व उषा तिवारी आदि थे।

चान्द्रायण साधना महापुरश्चरण

सैंधवा, बड़वानी। मध्य प्रदेश

गायत्री धाम सैंधवा में प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक चान्द्रायण साधना का विशेष सत्र आयोजित होता है। इस विशिष्ट साधना के साथ शरीर, मन एवं आत्मा के शोधन के लिए विशिष्ट प्रयोग भी जुड़े हैं। जहाँ प्राकृतिक वातावरण में साधना के अनुकूल वातावरण है, वहीं गायत्री धाम में परम पूज्य गुरुदेव के विचार क्रान्ति अभियान के अन्तर्गत साधनात्मक ऊर्जा के सुनियोजन हेतु विभिन्न प्रकार के रचनात्मक आन्दोलनों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था बनाई गई है।

इस वर्ष गायत्री धाम सैंधवा में महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश एवं आंध्र प्रदेश से आए 85 साधकों ने चान्द्रायण साधना के विशेष सत्र में भाग लिया। साधकों ने मानसिक शान्ति के साथ शारीरिक आधि-व्याधियों से मुक्ति एवं कायाकल्प जैसी अनुभूतियाँ कीं। शान्तिकुञ्ज जैसी दिनचर्या में आहार, विहार एवं विचार संयम के साथ लोगों ने जीवन में नई ताजगी अनुभव की।

हँसी मन की गाँठें खोल देती है, अपनी ही नहीं दूसरों की भी।